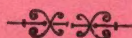
हड़ और उसके सौ उपयोग



लेखक
आयुर्वेदाचार्य पं० गंगा प्रसाद गांगेय
प्रधानाचार्य एवं प्रधान चिकित्सक
भारतीय प्राकृतिक विद्यापीठ एवं चिकित्सालय
सरसई, पो० खागा,
जिला—फतेहपुर



प्रकाशक
तेजकुमार बुकडिपो (प्रा०) लिमिटेड
उत्तराधिकारी—नवल किशोर बुकडिपो, लखनऊ
१, त्रिलोकनाथ रोड, लखनऊ—२२६००१



तेजकुमार भार्गव द्वारा
तेजकुमार प्रेस (प्रा०) लिमिटेड, लखनऊ में मुद्रित
प्रथम बार ३०००]　　१९८४　　[

दो शब्द

हर, हर्र या हरड़ आयुर्वेद के प्रमुख रसायन त्रिफला का एक प्रमुख घटक है। बहुत से औषध द्रव्यों के गुण-दोषों की समीक्षा करते हुए महर्षि चरक ने कहा है—'हरीतकी पथ्यानां' अर्थात् रोग नाशक द्रव्यों में हर्र सर्वश्रेष्ठ द्रव्य है। सामान्य उदर-विकारों में हर्र के घरेलू प्रयोग सर्वसामान्य में सुप्रचलित हैं।

हर्र हर रोग की प्रभावशाली और गुणकारी महौषधि है। आयुर्वेदीय चिकित्सा ग्रन्थों में हर्र के सैकड़ों प्रयोग हैं। एक घटक के रूप में तो सैकड़ों चूर्णों, पाकों, पाकों-अवलेहों, आसवारिष्टों, वटिकाओं और रस-रसायनों में हर्र की योजना है। हर्र के विशिष्ट शास्त्रीय योगों-प्रयोगों का यदि संकलन किया जाय, तो हर्र पर सैकड़ों पृष्ठों की पुस्तक बन सकती है। किन्तु सामान्य पाठकों की सुविधा के लिये इस पुस्तक में हर्र के कतिपय चुने हुए प्रयोग ही दिये गये हैं।

आशा है गृह-चिकित्सा प्रेमी पाठकों और आयुर्वेदीय चिकित्सा प्रणाली के नवीन चिकित्सकों के लिये यह छोटी-सी पुस्तक पर्याप्त उपयोगी सिद्ध होगी।

सरसई,
पो० खागा, जिला फतेहपुर
दिनांक : २-१०-८३

गंगा प्रसाद गांगेय

हर्र और उसके सौ उपयोग

विषय-सूची

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या

—:०:—

हर्र और उसके सौ उपयोग

आयुर्वेद के सर्वोत्कृष्ट रसायन द्रव्य त्रिफला के तीन घटकों—हर्र, आँवला और बहेरा—में हर्र प्रमुख रसायन पदार्थ है। रोगों के आक्रमण से शरीर को संरक्षित कर शरीर को नीरोग और स्वस्थ रखने और आयुर्बल को स्थिर कर वृद्धावस्था के लक्षण वलीपलित आदि को जल्दी न प्रगट करने वाली औषधियाँ रसायन कही जाती हैं। चरक-संहिता (सूत्रस्थान, अध्याय २५, सूत्र ३९) में अनेक द्रव्यों के गुणधर्मों का वर्णन करते हुए कहा गया है कि आयु को स्थिर रखने वाले पदार्थों में आँवला और पथ्य औषधों यानी रोगों को दूर कर शरीर को स्वस्थ रखने वाली औषधियों में हर्र सर्वोपरि है।

देवताओं के वैद्य अश्विनीकुमारों के प्रश्न करने पर दक्ष प्रजापति ने उत्तर दिया कि जब देवराज इन्द्र ने अमृत पिया, तो उसमें से एक बूँद अमृत पृथ्वी पर गिर पड़ा, उससे सात प्रकार की हर्रें उत्पन्न हुईं। हर्र के सात भेदों के नाम इस प्रकार हैं—विजया, रोहिणी, पूतना, अमृता, अभया, जीवंती और चेतकी

हर्र। विजया हर्र विन्ध्याचल पर्वत पर, चेतकी हिमालय पर, पूतना सिन्धु नदी के किनारे, रोहिणी प्रत्येक स्थान में, अमृता और अभया चम्पारण्य देश में और जीवन्ती सौराष्ट्र प्रदेश में उत्पन्न होती है। तुम्बी के समान गोल विजया, साधारण गोल रोहिणी, बड़ी गुठली वाली सूक्ष्म पूतना, अधिक गूदे वाली अमृता, पाँच रेखा युक्त अभया, सुवर्ण के वर्ण वाली जीवन्ती, तीन रेखा वाली चेतकी कही जाती है। विजया सम्पूर्ण रोगों में उत्तम गुणकारी, रोहिणी ब्रण (घाव) भरने में उत्तम, पूतना लेप में उपयोगी, अमृता रेचनार्थ, अभया नेत्र-रोगों में हितकारी, जीवन्ती समस्त रोगों में गुणकारी और चेतकी चूर्ण के लिए उत्तम होती है। सफेद छै अंगुल लम्बी और काली हर्र, एक अंगुल विस्तारवाली होती है।

हर्र के पेड़ बड़े-बड़े होते हैं और इसकी गणना शाखी वृक्षों में है। इसकी लकड़ी बड़ी सुदृढ़ होती है, और इमारत आदि के लिए अच्छी होती है। हर्र के पत्ते बड़े-बड़े अडूसे के पत्तों के समान, दो दो पत्ते एक शाख में इधर-उधर लगते हैं और कुछ-कुछ लालिमा लिए हरे और रूखे होते हैं। फूल बहुत छोटे-छोटे पीले रंग के होते हैं। इसके फल बिहारी नींबू

के समान दोनों ओर से लम्बे नोकदार और बीच में गोल होते हैं। हर्र जब सूख जाती है तो ऊपर से खुरदरी सी दीखने लगती हैं और पाँच रेखासी जान पड़ती हैं। कुछ लोग अधसूखियों को तोड़ तोड़ कर धूप में डाल देते हैं, उस को हर्रा कहते हैं। प्रायः छीपी लोग उसे रँगाई के काम में लाते हैं। अपरिपक्व कच्ची छोटी छोटी बतियाँ जो पेड़ से झर जाती हैं, उन्हें सुखा लिया जाता है, उन्हें छोटी हर्र कहते हैं।

विभिन्न भाषाओं में हर्र के नाम

संस्कृत—

शिवा, हरीतकी, पथ्या, चेतकी, विजया, जया, प्रपथ्या, प्रमथा, अमोघा, कायस्था, प्राणदा, अमृता, जीवनीया, हेमवती, पूतना, वृतना, अभया, वयस्था, नन्दिनी, श्रेयसी और रोहिणी।

हिन्दी—हरड़, हड़, हर्र।

बँगला—हरीतकी।

मराठी—हिरडा, हिरडे।

गुजराती—हरडां।

तामिल—कड्काई।

फारसी—हलैने जर्द, अस्कर।

अरबी—एलहीलज, कावली, अहलीज अस्कर।

अँग्रेजी—ब्लैक मायरोबोलन चेबुलिक (Black Myrobalan Chebulic)।

लेटिन—टरमिनेलिया चेबुला (Terminalia Chebula)।

आयुर्वेद मतानुसार गुण धर्म

"हर्र में लवण रस के अतिरिक्त शेष पाँच रस होते हैं। विशेष रूप से कषाय रस है। यह रूक्ष, गर्म, अग्निदीपक, बुद्धि को हितकर, मधुर विपाक वाली, रसायन, नेत्रों के लिए हितकर, हल्की आयुवर्द्धक, शरीर को पुष्ट करने वाली, वायु का अनुलोमन करने वाली, श्वास, कास, प्रमेह, अर्श को नष्ट करने वाली है।"

"हर्र सर, बुद्धिदाता, आयुवर्द्धक, नेत्रों के लि हितकारी, बलवर्द्धक, लघु, श्वास, खाँसी, प्रमेह बवासीर, कुष्ठ, शोथ, उदर रोग और कृमि रो नाशक है। स्वर, विकृति, गृहणी दोष, विबन्ध (कोष्ठ बद्धता, कब्ज), विषमज्वर, गुल्म, आध्मान, घाव छर्दि, हिचकी, खाज, हृद्रोग नाशक है। कामल शूल, अफरा, प्लीहा-नाशक है। मधुरता और अम्ल से वातनाशक, कषाय और स्वादुपन से पित्तनाश

और तिक्त और कषाय रस के कारण कफ को हरती है।"

हर्र की मींग में मधुर रस, नसों में अम्ल रस, डंडी में कटु रस, छाल में चरपरा रस और गुठली में कसैला रस होता है।

हर्र में कषाय रस प्रमुख और शेष चार कटु, तिक्त, अम्ल और मधुर अनुरस है। रसों के गुण-धर्म और प्रभाव का वर्णन करते हुए चरक ने कषाय रस का गुण इस प्रकार बताया है—कषाय रस संशमन (दोषों को शांत करने वाला), संग्राही (Astringent), संधारण (रोकने वाला), पीड़न (निचोड़ने वाला तथा ब्रण पर लगाने से उनके सिरों को सिकुड़ने से अन्दर के यूप आदि स्राव को बाहर निकालता है), रोपण करने वाला, सुखाने वाला, स्तम्भक, कफ पित्त तथा रक्त को शान्त करने वाला, शरीर की आर्द्रता को शोषण करने वाला, रूक्ष, शीत और गुरु होता है।

कषायः स्तम्भनः शीतः सोऽभयामतोन्यथा

अर्थात् कषाय रस वाले द्रव्य स्तम्भन तथा शीतवीर्य होते हैं, पर हर्र कषाय रस युक्त होती हुई भी सारक (विरेचक) तथा उष्णवीर्य होती है।

रोगों की उत्पत्ति का कारण वात, पित्त, कफ दोषों में किसी एक दो या तीनों का प्रकोप और शरीर में दूषित मलों—विजातीय पदार्थों का संचयन है। अपने अनुलोमन गुणों के कारण हर्र दूषित मलों को निकाल कर शरीर को स्वस्थ रखती है, जैसा कि आयुर्वेद का कथन है—

कृत्वा पाकं मलानां यद्भित्वा बन्धमधो नयेत्।
तच्चानुलोमनं ज्ञेयं यथा प्रोक्ता हरीतकी ॥

जो औषधि मल वातादि दोषों के कोप को शांत कर परस्पर बद्ध अथवा अबद्ध मलों को पृथक् पृथक् कर नीचे गिराये अथवा वात, मूत्र, मल का बन्ध अर्थात् बद्ध कोष्ठ को स्वच्छ कर मलादिकों को नीचे ले जाकर गुदा द्वारा निकाले, उसे अनुलोमन कहते हैं, यथा हर्र।

जो हर्र नई, चिकनी, गोल तथा भारी हो, जल में डालने से डूब जाय, वह हर्र उत्तम और अति गुणकारक है। ऐसी नई हर्र तौल में २ तोले की हो तो श्रेष्ठ होती है।

चबा कर खाई हुई हर्र अग्नि को बढ़ाती है। पीस कर खाई हुई मल को शुद्ध करती है अर्थात् रेचन करती यानी कोष्ठबद्धता को मिटाती है।

जल में पकाई हुई हर्र दस्तों को बन्द करती है और भुनी हुई तीनों दोषों को नष्ट करती है।

आयुर्वेद का कथन है कि अग्नि (जठराग्नि) ही मनुष्य के बल की जड़ और वीर्य जीवन की जड़ है। इसलिए मनुष्य को अग्नि और वीर्य की रक्षा हर प्रकार से करनी चाहिए।

दीपन, पाचन, अग्निवर्द्धक होने से हर्र अग्नि को दीप्त रखती है। कोष्ठबद्धता रोगों की जननी है। हर्र कब्ज को नष्ट करती है। अधिकांश कब्ज-नाशक औषधियाँ आमाशय को दुर्बल करती और आदी बनाती हैं, किन्तु हर्र आमाशय को सबल करती है और आदी नहीं बनाती।

भोजन के साथ खाई हुई हर्र बुद्धि, बल और इन्द्रियों को प्रकाशित करने वाली होती है, वात, पित्त और कफ नाशक है तथा मूत्र और मल को निकालती है। भोजन के पश्चात् खाई हुई हर्र अन्नपान से उत्पन्न वात, पित्त और कफ से उत्पन्न दोषों को तुरन्त हरने वाली है।

हर्र को सेंधा या काला नमक के साथ खाने से कफ को, खाँड़ (बूरा) के साथ खाने से पित्त को और घृत के साथ खाने से वायु से उत्पन्न हुए सब रोगों को नष्ट करती है।

हर्र, सोंठ और गुड़ तीनों के समान भाग मिश्रण को 'त्रिसम' कहते हैं। 'त्रिसम' दीपन, पाचन, वात, पित्त, कफ तीनों दोषों का नाशक, विबन्ध, आनाह, शूल, अर्श, शोथ आदि अनेक रोगों का नाशक है। **निषेध**—मार्ग चलने से थका हुआ, निर्बल, रूक्ष प्रकृति वाला, दुर्बल शरीर वाला, लंघन किये हुए, अधिक पित्त वाला, गर्भवती स्त्रियों तथा जिनका रक्त निकल गया हो, उनको हर्र नहीं खानी चाहिए।

आयुर्वेदिक ग्रंथों में हर्र के और हर्र युक्त सहस्त्रों योग हैं। हर्र हजारों रोगों की महौषधि है। सैकड़ों चूर्णों, पाकों, अवलेहों, वटिकाओं आसव-अरिष्टों और रस-रसायनों में हर्र की योजना है। इस छोटी पुस्तक में यथासम्भव बहुत सरल सुलभ छोटे और चुने हुए ही हर्र के विविध रोगों पर उत्तम, गुणकारी और अनुभूत योग दिये जा रहे हैं।

हर्र के कुछ विशिष्ट शास्त्रीय योग

१. हरीतकी रसायन

(१) रसायन के गुणों की इच्छा करने वाले को हर्र को वर्षा ऋतु में सेंधा नमक के साथ, शरद ऋतु में खाँड़ के साथ, हेमन्त ऋतु में सोंठ के साथ,

शिशिर ऋतु में पीपल के साथ, बसन्त ऋतु में शहद के साथ और ग्रीष्म ऋतु में गुड़ के साथ सेवन करना चाहिए।

(२) भोजन के पूर्व बहेरा का चूर्ण, भोजन करने के बाद आँवले का चूर्ण और भोजन के पच जाने पर हर्र का चूर्ण मधु और घृत के साथ निरन्तर एक वर्ष तक खाने से रसायन-गुणों की प्राप्ति होती है। शास्त्रकार ने हर्र १, बहेड़ा २ और आँवला ४ सेवन करने को लिखा है। किन्तु यह मात्रा बहुत अधिक है। इसका चतुर्थांश पर्याप्त है। हर्र, बहेरा, आँवला नया और सर्वोत्तम श्रेणी का ही लेना चाहिए।

(३) उत्तम रसदार काबुली हर्र को रात्रि को छाने हुए स्वस्थ गौ के मूत्र में भिगो दें। दिन में निकाल कर सुखा लें। गर्मी के दिनों में सूख जाने पर उठा लें। इस प्रकार निरन्तर २१ दिन तक भिगोते-सुखाते रहें।
मात्रा—१-१ हर्र की गुठली निकाल कर बक्कल को पीस कर उष्ण जल से सेवन करें। जलोदर आदि कठिन रोगों में दूनी मात्रा और दिन में दो बार सेवन करें।

यह रेचक योग है। दो-तीन दस्त आ सकते हैं, तथापि अहितकर नहीं। इसके सेवन से उदर के

समस्त विकार, जो उदरशोधन से साध्य हैं, १०-२०-३० दिन में दूर हो जाते हैं। स्वल्प मूल्य की औषधि कष्ट साध्य उदर रोगों को दूर कर देती है।

यह हरीतकी रसायन उदर में आम-मल-संचय, ग्रहणी, अग्निमांद्य, अजीर्ण, आध्मान, अधोवायुरोधन, आंत्रगतवात, उदावर्त, उदरशूल, उदरकृमि, शिरोशूल, नेत्रशूल, नेत्रों में मल संचय, कफज अर्श, जीर्ण ज्वर, कफज हद्रोग, भगंदर आदि को दूर करती है। जीर्ण मलावरोध (पुराने कब्ज) रोगी के लिए अतिशय हितकर है। २-४-६ मास के सेवन से शरीर स्वस्थ और सबल हो जाता है तथा अग्नि प्रदीप्त हो जाती है। प्रयोग-निषेध--आमाशयिक व्रण, आंत्रव्रण, मंथर ज्वर, अति क्षीण व्यक्ति, अतिसारी, सगर्भा, अतिवृद्ध, क्षयी, मधुमेही को इस का प्रयोग निषेध है। ४ रत्ती गोखरू चूर्ण के साथ देने से मल-मूत्र दोनों का रेचन होता है।

(४) छोटी हर्र ८ भाग, सोंठ १ भाग, सेंधा नमक १ भाग, छोटी पीपल १ भाग, शर्करा (चीनी) १ भाग, गुड़ २ भाग, उत्तम शुद्ध शहद यथावश्यक जितने से अवलेह बन जाय। उपरोक्त सभी द्रव्यों के

महीन चूर्ण को शहद में यथाविधि सुमिश्रित कर अवलेह बना कर सुरक्षित रख लो।

रात को सोते समय १० ग्राम या प्रातः या रात को यथास्थिति दूध या जल के साथ।

उदर के विविध विकार—जीर्ण अग्निमांद्य, जीर्ण प्रवाहिका, श्वास-कास, दुष्ट प्रतिश्याय, विविध वात रोग तथा सभी जीर्ण रोग—जैसे अर्श, पांडु-कामला आदि जिनसे पीड़ित रोगी औषधियाँ लेते लेते ऊब गये हों, सभी में अमृतोपम लाभप्रद है। केवल धैर्य-पूर्वक निरन्तर कुछ दिनों तक सेवन करते रहने की आवश्यकता है।

यह प्रयोग ऋतु-हरीतकी का ही संस्कारित विशेष स्वरूप है। यद्यपि अनेक बार मलभेद के रोगियों को भी आगे इस रसायन से मल बँध जाता है, तथापि पतले दस्त के रोगियों को इस का प्रयोग न करना चाहिए।

२. मधुपक्व हरीतकी

दशमूल, पीपल, चित्रक, कैथ, बहेरा, कायफल, सोंठ, पीपलामूल, सेंधा नमक, लाल रोहिड़ा, जमाल-गोटा, दाख, जीरा, हल्दी, दारुहल्दी, आँवले, वायविडंग, चिरचिटा, देवदारु, काकड़ासिंगी, पुनर्नवा, धनिया, लौंग, अमलतास, गोखरू, विधारा, सागर गोटा,

खस प्रत्येक ८-८ तोला, उत्तम देशी हर्र २५६ तोला-सबको ५ आढक जल में पकावें। पकते पकते नरम हो जाने पर हर्रों को निकाल कर उनकी गुठली अलग रख दें और काढ़े को छान कर उसमें गुठली निकाली हुई हर्रें डाल कर फिर पकावें। जब पकते-पकते गाढ़ा हो जाय, तब उतार कर शीतल होने पर शहद मिलावें। फिर ३ दिन बाद, ५ दिन बाद और १० दिन बाद शहद डालें। इस प्रकार सिद्ध की हुई हर्रों को स्वच्छ और सुदृढ़ शहद से भरे घी के चिकने पात्र में रखें।

धन्वन्तरि द्वारा नियोजित इस मधुपक्व हरीतकी के सेवन से सम्पूर्ण रोग नष्ट हो जाते हैं। श्वास, कास, क्षय, पांडु, हिक्का, वमन, मद, भ्रम, मुखरोग, तृषा, अरुचि, मंदाग्नि, प्लीहा, यकृत, उदर-रोग, महादारुण वातरक्त, मस्तक-पीड़ा, नेत्र-पीड़ा, कर्ण-पीड़ा, दुष्ट ग्रहणी, त्रिदोष जन्य शोथ तथा अन्यान्य सर्व रोग नष्ट हो जाते हैं।

३. अगस्त्य हरीतकी

एक आढक जौ लेकर उनको जौकुट कर चौगुने जल में औटावे। चौथाई जल शेष रहने पर उतार छान कर रख लें और जवों को फेंक दे या पशु को

खिला दें। फिर दशमूल की औषधियाँ ८० तोला, चित्रक, पीपलामूल, ओंगा, कचूर, कौंच बीज, शंखपुष्पी, भारंगी, गजपीपल, खरेंटी की जड़, गाँठदार पोहकरमूल ८-८ तोला। इन २० औषधियों को एकत्र कर जौ कुट कर ५ आढक जल मिला कर औटावें। चतुर्थांश जल शेष रहने पर उतार कर छान लें। इसको पूर्वोक्त जौ के काढ़े में मिला दें। फिर इस काढ़े में बड़ी हर्रें १०० नग, घी और तिल का तेल ३२-३२ तोला, गुड़ १ तुला भर मिला कर पकावें। गाढ़ा हो जाने पर उतार लें। शीतल होने पर पीपल का चूर्ण और शहद दोनों पाव-पाव भर उस पाक में मिला दें। इस प्रकार अगस्त्य ऋषि कथित इस अवलेह को 'अगस्त्य हरीतकी' कहते हैं।

इसमें से नित्य २ हर्रें अवलेह के साथ खाने से क्षय, खाँसी, ज्वर, श्वास, हिचकी, बवासीर, अरुचि, पीनस, संग्रहणी आदि रोग दूर होते हैं। शरीर की झुर्रियाँ दूर होती और सफेद बाल काले हो जाते हैं। बल और कांति की वृद्धि होती है। यह अवलेह रसायन और सम्पूर्ण रोग नाशक है।

४. अभयारिष्ट

बड़ी हर्र गुठली रहित ५ सेर, मुनक्का २½ सेर,

विडंग आधा सेर, महुवा के फूल आधा सेर—सब को जौ कुट कर १ मन १२ सेर जल में पका कर १३ सेर जल रहने पर उतार कर एक मटके में भर कर, उसमें गुड़ ५ सेर, गोखरू, निशोथ, धनिया, धाय के फूल, इन्द्रायण मूल, चव्य, सौंफ, सोंठ, मोचरस, चन्द्रसूर (हालों) ८-८ तोला, दन्ती मूल २ तोला प्रत्येक का चूर्ण डाल कर पात्र का मुख बन्द कर एक मास तक संधान करने के बाद छान कर बोतलों में भर दें।

भोजन के पश्चात् आधा तोला से २ तोला तक अरिष्ट समान भाग जल मिला कर लेने से अर्श, कब्ज, मंदाग्नि, अजीर्ण, उदर शूल आदि समस्त उदर विकार दूर होते हैं। यह अरिष्ट मल-मूत्र-प्रवर्तक और अग्निदीपक है। प्रायः रेचन औषधियों के प्रयोग से पेट में ऐंठन-मरोड़ होती है और निरन्तर प्रयोग से आमाशय को हानि पहुँचती है, इसके प्रयोग से बिना ऐंठन-मरोड़ और किसी हानि के मलों का निःसरण होता है।

५. अभया मोदक

हर्र, मिर्च, सोंठ, वायबिडंग, आँवले, पीपल, पीपलामूल, दालचीनी, पत्रज, नागरमोथा समान भाग,

दंती ३ भाग, निशोथ ८ भाग, खाँड़ ६ भाग—सबका चूर्ण बनाकर शहद में मिलाकर एक-एक कर्ष के मोदक बना लें।

एक मोदक प्रातः खाने के बाद थोड़ा जल पीने से उत्तम विरेचन होता है। जब तक दस्त होते रहें, तब तक गर्म पदार्थ का सेवन न करें तथा आहार-विहार-पेय सब नियमित रहे। इसके सेवन से विषम ज्वर, मंदाग्नि, पांडुरोग, खाँसी, भगंदर, कुष्ठ, गुल्म, अर्श, गलगंड, भ्रम, उदर रोग, प्लीहा, प्रमेह, राजयक्ष्मा, नेत्र रोग, बादी के रोग, अफरा, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, पीठ, पसली, कमर, जाँघ, पिंडली की पीड़ा आदि सब रोग दूर होते हैं। इस अभयादि मोदक का निरन्तर सेवन करने से पलित रोग (बालों का सफेद होना) दूर होकर बाल काले उगने लगते हैं।

६. पथ्यादि गुग्गुल

हर्रे १००, बहेड़े २००, आँवले ४००, गूगुल ६४ तोला—सबको १०२४ तोले जल में रात भर भिगो कर सवेरे अर्द्धावशेष क्वाथ बनाकर छानकर फिर लोहे के पात्र में पकाओ। गाढ़ा हो जाने पर आग से उतारकर उसमें वायबिडंग, जमालमोटा,

शोधित, हर्र, बहेरा, आँवला, गिलोय, निशोथ, पीपल, सोंठ, मिर्च का चूर्ण २-२ तोला डालो। सबको सुमिश्रित कर सुरक्षित रख लो।

यह पथ्यादि गुग्गुल सेवन करके शीतल जल पियो। शीतल पदार्थों का भोजन करो। इसके सेवन से गृध्रसी, नवीन खंजता, उग्र प्लीहा, गुल्म, पांडु, मंदाग्नि, कंडु, वमन, वातरक्त, विशेषकर गृध्रसी वात को नष्ट करता है। इसे सेवन करने वाला हाथी के समान बलशाली और घोड़े के समान वेगवान हो जाता है। आयुवर्द्धक, नेत्र ज्योतिवर्द्धक, शरीर पुष्टि-कर्ता, विषनाशक, व्रणरोपक और सम्पूर्ण रोगों में लाभदायी है।

७. फलारिष्ट

हर्र गुठली रहित १३ छटाँक, आँवला गुठली-रहित १३ छटाँक, इन्द्रायण-मूल, कैथ, पाठा, चित्रक-मूल प्रत्येक ८-८ तोला का जौकुट चूर्ण—सबको २६ सेर जल में पकावें। ६¼ सेर जल शेष रहने पर एक मटके में डाल कर उसमें ५ सेर गुड़ घोल दें और मटके का मुख कपरौटी कर भलीभाँति बन्द कर १५ दिन रखा रहने के बाद छान कर बोतलों में भर कर सुरक्षित रख दें।

चौथाई तोला से ४ तोला, समान भाग जल मिला कर भोजन के पश्चात् दोनों समय सेवन करने से अर्श, ग्रहणी, हृद्रोग, पांडु, प्लीहा-वृद्धि, विषमज्वर, कास, उदावर्त में उत्तम लाभ होता है। यह अरिष्ट मल-मूत्र, अपान वायु-प्रवर्तक, कोष्ठबद्धता, उदरशूल, अजीर्ण-मंदाग्नि आदि उदर-विकार-नाशक, अग्नि-दीपक, पाचक और सारक है।

उदर-विकार

८. अजीर्ण-मंदाग्नि

(१) ऐसी नई, चिकनी और वजनी हर्रें जो एक तोले से अधिक वजन की हों और जल में डालने से डूब जायें, चूर्ण बना कर रख लें। १ माशा चूर्ण २ माशे गुड़ में मिलाकर भोजन के पश्चात् नित्य नियमपूर्वक खाने से भोजन का उत्तम परिपाक होता और मंदाग्नि नष्ट हो जाती है।

(२) हर्र के बक्कल और सोंठ का समभाग चूर्ण ३ से ६ माशे की मात्रा में एक तोला गुड़ में मिला-कर शीतल जल के साथ नित्य खाने से अजीर्ण-मंदाग्नि दूर होकर क्षुधा-वृद्धि होती है।

(३) हर्र के बक्कल का चूर्ण और सेंधा नमक

का नित्य सेवन करने से अजीर्ण-मंदाग्नि नष्ट होकर भूख बढ़ती है।

(४) बड़ी हर्र १ तोला, पीपल १ तोला, ३२ तोला काँजी में औटाकर ८ तोला शेष रहने पर एक आना भर सेंधा नमक मिलाकर पीने से अग्नि-मांद्य, अजीर्ण नष्ट होकर जठराग्नि प्रदीप्त होती है।

(५) हर्र, सेंधा नमक, पीपल और चित्रक का चूर्ण गर्म जल के साथ लेने से गुरुपाक-गरिष्ठ भोजन शीघ्र पच जाता है।

(६) हर्र का चूर्ण जौ के पानी या काँजी के साथ पीपल और सेंधा नमक मिलाकर खाने से धूम्र-युक्त डकार का अति अजीर्ण नष्ट होता है।

(७) हर्र, पीपल, सोंचर नमक का चूर्ण दही के पानी के साथ या गर्म जल के साथ सेवन करने से चारों प्रकार का अजीर्ण, मंदाग्नि, अरुचि, आध्मान, वातगुल्म और शूल का शीघ्र नाश होता है।

(८) हर्र का बक्कल ६ भाग, पीपल ४ भाग, चित्रक २ भाग, सेंधा नमक २ भाग का चूर्ण बना कर २-३ माशे चूर्ण जल के साथ सेवन करने से अजीर्ण दूर होकर क्षुधावृद्धि होती है।

(९) हर्र, दाख और मिश्री समान पीस कर

शहद के साथ २-२ माशे की गोलियाँ बना लो। नित्य १-२ गोली पानी के साथ लेने से अजीर्ण दूर हो जाता है।

(१०) हर्र, बहेरा, आँवला, मुलहठी, असगंध, शतावर—सब समभाग ले कपड़छन चूर्ण बना लो। ३ माशे चूर्ण शहद के साथ, भोजन के आधा घण्टे पूर्व चाटने से मंदाग्नि की प्रत्येक अवस्था में लाभप्रद है। रोगमुक्त होने के पश्चात् होने वाले अग्निमांद्य में शीघ्र गुणकारी है। सुसुप्त पित्त को सक्रिय करके कफ को छाँटता है।

(११) हींग भुनी १ भाग, वच २ भाग, पीपल ३ भाग, अदरख ४ भाग, अजवायन ५ भाग, हर्र ६ भाग, चित्रक ७ भाग, मीठा कूट ८ भाग सबको कूट पीस छान कर शीशी में रख लो। इस चूर्ण को ३ से ६ माशे की मात्रा में दही, मट्ठा या गरम पानी के साथ सेवन करने से अजीर्ण, मंदाग्नि उदावर्त प्लीहा आदि समस्त उदर रोग नष्ट होते हैं। यह अर्श, वातविकार और निर्बलता नाशक है।

९. कोष्ठबद्धता (कब्ज)

(१) काबुली हर्र के बक्कल का चूर्ण ६ माशे से १ तोला तक रात को सोते समय गर्म दूध या गर्म

जल के साथ लेने से सबेरे खुल कर दस्त साफ होता है। परीक्षित है।

(२) छोटी हर्र और काला नमक समभाग मिलाकर चूर्ण बना लें। ६ माशे से १ तोला चूर्ण गर्म जल के साथ लेने से एक-दो दस्त होकर पेट साफ हो जाता है।

(३) त्रिफला (बड़ी हर्र, आँवला, बहेरा तीनों समभाग) २ तोला थोड़ा कूट कर आध सेर पानी में पकावें। आध पाव पानी शेष रहने पर २½ तोला रेंड़ी का तेल (कैस्टर आयल) मिलाकर पीने से कब्ज दूर हो जाता है। सौम्य, स्निग्ध, हानिरहित उत्तम विरेचन है।

(४) रात को सोते समय ६ माशे से १ तोला तक त्रिफला चूर्ण खाकर ऊपर से पाव भर गर्म दूध या गर्म चाय या गर्म पानी पीने या गर्म दूध में २½ तोला से ५ तोला तक कैस्टर आयल मिलाकर पीने से पेट का शुष्क मल नरम होकर दो-तीन दस्त होकर पेट साफ हो जाता है। पेट में ऐंठन-मरोड़ नहीं होती और न आँतें कमजोर होती हैं। यदि त्रिफला चूर्ण घी और शहद (विषम भाग) के साथ रात को लिया

जाय, तो पेट की सफाई के साथ नेत्र ज्योति भी बढ़ती है।

(५) काली हर्र को घी में भून कर फुला लें। फिर हर्र के बराबर काला नमक मिलाकर चूर्ण बना लें। ३ से ६ माशे चूर्ण रात को सोते समय गर्म पानी के साथ सेवन करने से प्रातः खुल कर दस्त हो जाता है और आँतों को कोई क्षति नहीं होती।

(६) असली हर्र जुलाफा का चूर्ण १½ सेर माशे शक्कर मिला कर जल के साथ लेने से ३ घंटे बाद दस्त आने आरम्भ होंगे और ३-४ दस्त आकर पेट साफ हो जायगा। कुछ खाते ही दस्त बन्द हो जायेंगे। दलिया, खिचड़ी आदि हल्का भोजन लें।

(७) २५० ग्राम छोटी हर्र को १२ घंटे पानी में भिगोये रखने के बाद छाया में सुखा लें। रेंड़ी का तेल गर्म कर इन हर्रों को भूनकर फुला लें और कूट पीस छान कर चूर्ण बना लें। २५ ग्राम भाँग साफ कर २ घंटे पानी में भिगोये रखने के बाद उसे पानी डाल डाल कर मल मल कर तब तक धोयें, जब तक साफ पानी न निकलने लगे। इस धुली भाँग को छाया में सुखाकर देशी घी में भूनकर चूर्ण बना लें। फिर उसमें ५० ग्राम काला नमक पीस कर हर्र

के चूर्ण में मिला कर रख लें। इस चूर्ण को सायंकाल शौच जाने के आधा घंटा पूर्व ५ से १० ग्राम की मात्रा में शीतल जल के साथ सेवन करें। चूर्ण खाने के बाद पाखाना अवश्य जाना चाहिए। इस चूर्ण का प्रतिदिन सेवन करने से स्थायी कब्ज नष्ट होता है। इसके अतिरिक्त यह चूर्ण एक पौष्टिक रसायन भी है।

(८) हरीतक्यादि पाक—हर्र ७५ तोला, सनाय ४० तोला, विधारा २० तोला और निशोथ ५ तोला तथा अजवायन, आँवला, खुरफा, दालचीनी, तेजपात, काली मिर्च, धनिया, नागरमोथा, पीपल, बड़ी इलायची, बहेरा, लौंग, सोंठ, सौंफ और हर्र प्रत्येक २½-२½ तोले—सबको कूट-पीस कपड़छन कर लो। फिर ३¾ किलो चीनी की नरम चाशनी बनाकर नीचे उतार कर सारा चूर्ण डाल कर भली भाँति मिला लो।

६ माशे से २ तोले तक पाक को गरम दूध या गरम जल के साथ रात को सोते समय सेवन करने से सबेरे साफ खुल कर पतला नहीं बँधा हुआ दस्त आता है। मलावरोध मिटकर पेट हल्का हो जाता है। इससे पेट में ऐंठन-मरोड़ नहीं होती। पुराने कब्ज की अमृतोपम औषधि है। बालक-वृद्ध नर-नारी सबके लिए उपयोगी और सुस्वादु पाक है।

१०. उदर शूल

(१) हर्र और राई का चूर्ण मद्य या घी में मिला कर खाने से भयंकर उदर शूल नष्ट होता है।

(२) हर्र के बक्कल का चूर्ण गुड़ के साथ खाने से पित्त शूल शांत होता है।

(३) हर्र, अजवायन, सेंधा नमक, सोंचर नमक भुनी हींग और जवाखार का चूर्ण ३ से ६ माशे तक गर्म जल के साथ लेने से वातशूल दूर होता है।

(४) हर्र, पीपल, सोंठ, लौह भस्म का चूर्ण शहद और घी के साथ चाटने से परिणाम शूल (भोजन के २ घंटे बाद नित्य होने वाला उदर शूल) नष्ट होता है।

(५) शूलनाशिनी वटी—हर्र का बक्कल, त्रिकटु (सोंठ, मिर्च, पीपल), शुद्ध कुचला, शुद्ध गंधक, सेंधा नमक, भुनी हींग—सब समभाग का चूर्ण कर जल के साथ खरल कर चने—बराबर गोली बना लो। एक गोली प्रातः काल गर्म जल के साथ सेवन करने से शूल, संग्रहणी, अतिसार, अजीर्ण, मंदाग्नि आदि उदर-विकार दूर होते हैं।

(६) छोटी हर्र १५ तोला भुनी हुई, हिंग्वष्टक चूर्ण, सोडा बाई कार्ब ५-५ तोला, नौसादर २½ तोला,

टाटरी, मूलीक्षार, यवक्षार १-१ तोला—सबको पीस कर चूर्ण बनाकर रख लो। ३ माशा यह शिवाक्षार चूर्ण गर्म जल के साथ सेवन करने से हर प्रकार का उदरशूल दूर होता है।

(७) हरीतक्यादि पाक—हर्र का चूर्ण ३२ तोले तथा हर्र, बहेरा, आँवला, नागरमोथा, दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेशर, अजवायन, सोंठ, मिर्च, पीपल, धनिया, मुलेठी, सोया और लौंग १-१ तोला तथा निशोथ और सनाय का चूर्ण ८-८ तोले। ये सब चूर्ण एकत्र कर रख लें। फिर इन सबसे दुगुनी १२८ तोले खाँड़ या मिश्री की चाशनी में सारे चूर्ण को मिलाकर मोदक बना लें या बर्फी काट लें। ६ माशे से १ तोले की मात्रा में गर्म दूध के साथ सेवन करने से उदरशूल, अम्लपित्त, ६ प्रकार की अर्श, वातज रोग, कोष्ठगत वायु, कटिशूल और अफरा नष्ट होता है।

११. विविध उदर-विकार

(१) छोटी हर्र, अनार दाना, पीपल ४-४ तोला, काला नमक, सेंधा नमक ३-३ तोला, नौसादर, सफेद मिर्च, अजवायन, नींबू का सत (टाटरी) २-२ तोला, सोंठ २ तोला, हींग भुनी २ माशे, सत पोदीना

१ माशा—सबको कूट कर चूर्ण बना लें और इस चूर्ण में ३ छटाँक मिश्री पीस कर मिला दें। इस खट-मिट्ठे स्वादिष्ट चूर्ण को ३-३ माशे की मात्रा में दिन में ३ बार ताजे जल के साथ लेने से मंदाग्नि, अजीर्ण, मन की ग्लानि, जी मिचलाना, खाये भोजन का डकार के साथ उलटा आना, आदि उदर विकार नष्ट होकर मन प्रसन्न रहता है।

(२) **व्योषादि चूर्ण**—हर्र का बक्कल, बहेरे का बक्कल, आँवला गुठली रहित, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, सब १-१ तोला, काला नमक २ तोला—इन सातों द्रव्यों को कूट-पीस कपड़छन चूर्ण तैयार कर लें। १ माशे से ३ माशे चूर्ण जल के साथ सेवन करने से मंदाग्नि, अफरा, उदरशूल आदि उदर विकार दूर होते हैं। इस दीपन पाचन चूर्ण की एक विशेषता यह है कि रात को सोते समय एक मात्रा जल के साथ सेवन करने से अच्छी गहरी नींद आती है। आधुनिक गैस ट्रबल रोगियों को बहुत लाभकारी है।

(३) **अग्निमुख चूर्ण**—भुनी हुई हींग १ तोला, बच २ तोला, पीपल ३ तोला, सोंठ ४ तोला, अजवायन ५ तोला, हर्र ६ तोला, चित्रक मूल ७ तोला, कूट ८ तोला—सबको कूट-पीस छान कर महीन चूर्ण बना लें।

इस चूर्ण को ३ से ६ माशे की मात्रा में गर्म जल, दही या मद्य के साथ सेवन करने से मंदाग्नि, अजीर्ण, मलावरोध, उदर शूल आदि अनेक उदर व्याधियाँ दूर होती हैं।

(४) **हरीतक्यादि पाक**—आधा सेर हर्र चूर्ण को १० सेर गोदुग्ध में पकावें। जब खोवा बन जाय तो उसे आधा सेर घी में भून कर उसमें दशमूल २० टंक, बड़ी पीपल, कौंच बीज, जवासा, इन्द्रजौ और रेंड़ी के बीजों की मींगी प्रत्येक २½-२½ टंक और निशोथ १० टंक सबका महीन चूर्ण मिलावें। पश्चात् ३ सेर खाँड़ की चाशनी में सब को मिलाकर पाक जमा दें।

१ तोले की मात्रा में यह पाक सेवन करने से सर्व उदर रोग नष्ट होते हैं।

(५) **अमृत हरीतकी**—१०० हर्र गाय के मट्ठे में औटा कर नरम होने पर उनकी गुठली निकाल डालो। फिर सोंठ, मिर्च, पीपल, चव्य, चित्रक, दालचीनी, पाँचों नमक, भुनी हींग, जवाखार, सज्जी, दोनों जीरा, अजमोद और इन सब के समान चूक—इन सबके चूर्ण में नींबू के रस की १० भावनायें देकर यह चूर्ण उपरोक्त हर्रों में भर दो और इन्हें धूप में सुखा कर रख लो। अब यह 'अमृत हरीतकी'

बन गई। प्रति दिन १-१ हर्र गोली खाने से अजीर्ण दूर होकर क्षुधा वृद्धि होती है। मन्दाग्नि, गुल्म, शूल, संग्रहणी, बद्ध कोष्ठ, अफरा आदि उदर रोग और आम वात नष्ट होता है।

१२. अतिसार

(१) बड़ी हर्र का बक्कल १ तोला, आँवला शुष्क गुठली-रहित २ तोला दोनों का सूक्ष्म चूर्ण १-१ माशे की मात्रा में दिन में ३-४ बार ठंडे जल के साथ खाने से पतले दस्त आना बन्द हो जाते हैं।

(२) छोटी हर्रें ६ माशे, छोटी पीपल, सौंफ ३-३ माशे काला नमक १½ माशा—सब को कूट पीस कपड़छन कर लें। ६-६ माशे की मात्रा में गर्म पानी के साथ प्रातः दोपहर और संध्या को लेने से अतिसार, आमातिसार में शीघ्र लाभ होता है। अर्क सौंफ का अनुपान अधिक लाभदायक है।

(३) छोटी हर्रें ३० ग्राम, सौंफ, मिश्री ५०-५० ग्राम, बेलगिरी, सोंठ, इसबगोल की भूसी २५-२५ ग्राम। पहले सौंफ को भून लें। फिर इसबगोल की भूसी को छोड़ कर प्रत्येक द्रव्य को अलग-अलग कूट पीस कर एक में मिला लें। फिर इसी में इसबगोल भी मिला लें। वयस्कों को २ माशे और बच्चों को

१ माशे (ग्राम) की मात्रा में पानी के साथ दिन में तीन बार सेवन करने से पतले दस्त आना, पेट में मरोड़ होना, बार-बार मल का वेग लगना, आदि अतिसार के समस्त उपसर्ग शीघ्र दूर होते हैं।

१३. आमातिसार (प्रवाहिका, पेचिश)

(१) हर्र के बक्कल का चूर्ण ३ से ६ माशे की मात्रा में शहद के साथ चाटने से पेचिश दूर होती है। रोटी दाल न खाकर मूँग की खिचड़ी खायें।

(२) बड़ी हर्रें थोड़े गो घृत में भून कर महीन पीस कर समभाग शक्कर मिला कर रख लें। प्रातः शाम ६-६ माशे की मात्रा में सेवन करने से हर प्रकार की पेचिश में शीघ्र लाभ होता है। पथ्य में चावल और दही खायें।

(३) जवा हर्रें ५ तोला घी में भूनकर चूर्ण कर लें और उसमें ५ तोला सौंफ का चूर्ण मिला कर १० तोला खाँड़ मिला कर रख लें। १ तोला से १½ तोले की मात्रा में चावल के धोवन या जल के साथ देने से मल की गाँठें गिर जाती हैं और फिर स्वतः दस्त बन्द हो जाते हैं।

(४) छोटी हर्रें ६ माशे, सौंफ, छोटी पीपल ३-३ माशे, काला नमक १½ माशे—सबको कूट पीस

चूर्ण बना कर ६ माशे की मात्रा में अर्क सौंफ या गुनगुने पानी के साथ दिन में तीन बार लेने से सब प्रकार की प्रवाहिका नष्ट होती है।

(६) हरीतक्यादि चूर्ण—बड़ी हर्र, अतीस, सेंधा नमक, काला नमक, वच, भुनी हींग—सबका चूर्ण कर ३ से ६ माशे चूर्ण गर्म जल के साथ लेने से आमातिसार दूर होता तथा मल का अवष्टंभ होकर अग्नि प्रदीप्त होती है।

१४. संग्रहणी

(१) हर्र और पीपल समान ले महीन चूर्ण बना लें। ४ माशे चूर्ण गुनगुने जल के साथ दिन में दो तीन बार लेने से संग्रहणी नष्ट होती है। भोजन के पश्चात् १ तोला कुटजारिष्ट और रात को सोते समय इसबगोल की भूसी हल्के गरम दूध के साथ सेवन करने से शीघ्र लाभ होता है।

(२) हर्र का बक्कल, धनिया, सोंठ, बेल गिरी, सौंफ भुनी इसबगोल की भूसी प्रत्येक १००-१०० ग्राम—सभी को कूट-पीस कर कपड़छन चूर्ण तैयार करें। ५-५ ग्राम की मात्रा ताजा जल के साथ प्रातः दोपहर और शाम को लेने से आमातिसार और संग्रहणी में अवश्य लाभ होता है। चावल, दही और

कढ़ी तथा पपीते का शाक पथ्य है। रोटी, दूध, चाय और उष्ण पदार्थ त्याज्य हैं।

(३) हरीतक्यादि पाक—पहले दशमूल १२८ तोले और जौ ९६ तोले तथा पीपरामूल, भारंगी, शंखपुष्पी, खरेंटी, कचूर, सोंठ, अपामार्ग, नागरमोथा, पोहकरमूल और बड़ी पीपल ४-४ तोले—इन सब का जौकुट चूर्ण कर एक द्रोण (४०९६ तोले) जल में पकायें, उसी समय उसमें ६४ तोले हर्रों को पोटली में बाँध कर डाल दें। आठवाँ भाग जल शेष रहने पर क्वाथ के पानी को छान लें तथा हर्रों की गुठली निकाल कर उन्हें सिल पर पीस लें और २० तोले गोघृत में भून लें। पश्चात् उसमें उक्त छना हुआ क्वाथ और गुड़ १९२ तोले मिलाकर पकावें। जब चाशनी बन जाय तो नीचे उतारकर उसमें—जायफल, केशर, दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेशर, आँवला, बहेड़ा, अजवायन, जावित्री, सोंठ, कालीमिर्च और पीपल १-१ तोले का महीन चूर्ण तथा लौह भस्म और ताम्र भस्म १-१ तोले भलीभाँति मिलाकर पाक जमा दें या मोदक बना लें।

६ माशे से १-२ तोले की मात्रा में प्रातः सायं सेवन करने से संग्रहणी, जीर्णज्वर, अर्श, श्वास, कास, वातरक्त, धातुक्षीणता, धातुस्राव आदि विकार नष्ट होते हैं। यह बलदायक और पौष्टिक पाक है।

१५. उदरकृमि

हर्र की छाल, वायविडंग, सेंधा नमक और जवाखार का चूर्ण ३ से ६ माशे की मात्रा में नित्य मट्ठे के साथ पीने से एक सप्ताह में उदरकृमि नष्ट हो जाते हैं।

१६. छर्दि (वमन)

(१) हर्र का चूर्ण शहद के साथ चाटने से दोष गुदामार्ग में चले जाते हैं और वमन शीघ्र बन्द होते हैं।

(२) त्रिफला और वायविडंग का चूर्ण शहद के साथ चाटने से वमन बन्द होते हैं।

१७. हिचकी

हर्र का चूर्ण गर्म जल के साथ पीने से हिचकी बन्द हो जाती है।

१८. अम्लपित्त

(१) हर्र का चूर्ण मुनक्का के साथ खाने से अम्लपित्त अच्छा होता है।

(२) त्रिफला, परवल के पत्ते, नीम की छाल और गिलोय—प्रत्येक ६-६ माशे जौ कुट कर आध सेर पानी में पकाकर चतुर्थांश क्वाथ बनाकर, क्वाथ को

शीतल कर शहद मिलाकर पीने से अम्लपित्त नष्ट होता है।

(३) हरीतक्यादि पाक—२ सेर गोदुग्ध मंदाग्नि से पकावें। आधा दूध शेष रहने पर उसमें ५० तोले खाँड़ डालकर चाशनी सिद्ध कर उसमें हर्र चूर्ण और निशोथ चूर्ण १६-१६ तोले तथा दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेशर, नागरमोथा, तालीसपत्र, जीरा, जावित्री, लौंग, लौह भस्म, अकीक भस्म, और सुहागे की खील प्रत्येक १-१ तोले का महीन चूर्ण मिला कर पाक जमा दें या मोदक बना लें। १-२ तोले की मात्रा में इस पाक का सेवन करने से दुर्जय अम्लपित्त, अन्नद्रव शूल तथा अन्य सब प्रकार के शूल, कास, श्वास और वमन का नाश होता है। यह पाक हृद्य, बल्य, मेधा, अग्नि और कांति वर्द्धक है।

१९. आमाशयज व्रण (कैन्सर)

छोटी हर्र का चूर्ण १ माशा, शरपुंखा पंचांग-चूर्ण १ माशा—दोनों चूर्ण ६ माशा शुद्ध शहद में मिलाकर चाटने से और दशांग लेप १ तोला तथा छिलके-रहित रेंड़ी के बीज १ तोला दूध में पीस कर गरम कर गाढ़ा-गाढ़ा लेप आमाशय पर आध घंटा नित्य लगाने से आमाशय का व्रण ३ सप्ताह में ठीक हो

जायगा। भोजन में मिर्च मसाले और अम्ल पदार्थ सर्वथा त्याज्य हैं।

२०. यकृत-विकार व प्लीहा वृद्धि

(१) बड़ी हर्र, लाल रोहिड़ा दोनों का काढ़ा बना कर उसमें पीपल का चूर्ण व जवाखार मिला कर प्रातःकाल पीने से यकृत रोग, प्लीहा-वृद्धि और गुल्मोदर दूर होता है।

(२) पीपल, सोंठ, दन्ती समभाग—इन सब से दुगनी हर्र की छाल का चूर्ण बना कर गुड़ के साथ खाने से प्लीहा-वृद्धि नष्ट होती है।

(३) हर्र की छाल, शुद्ध भिलावा, जीरा सम भाग का चूर्ण कर सब के बराबर गुड़ मिला कर खाने से प्लीहा वृद्धि मिटती है।

(४) हर्र की छाल, रोहिरा की जड़ और सोंठ का चूर्ण ६ माशे की मात्रा में गोमूत्र के साथ नित्य सेवन करने से प्लीहा, यकृत-विकार, अर्श, प्रमेह, कफ-विकार, कुष्ठ और उदर विकार दूर होते हैं।

(५) बड़ी हर्र की छाल और काला नमक या हर्र छाल और पुराना गुड़ गरम जल के साथ लेने से प्लीहा वृद्धि नष्ट होती है।

(६) हर्र, पीपला मूल का चूर्ण लहसुन के साथ खाकर गोमूत्र पीने से प्लीहा वृद्धि दूर होती है।

(७) हर्र, शुद्ध भिलावा और जीरे का चूर्ण १-१ भाग लेकर महीन चूर्ण करें। फिर इस चूर्ण से छैगुना पुराना गुड़ लेकर चाशनी बनावें तथा चूर्ण को मिलाकर पाक जमा दें या मोदक बना लें। ३ माशे से ६ माशे पाक प्रातः ताजे जल के साथ लेने से एक सप्ताह में अतिवृद्ध प्लीहा नष्ट हो जाती है।

२१. वायुगुल्म

(१) हर्र का चूर्ण ६ माशे, २½ तोले रेंड़ी का तेल मिलाकर दूध के साथ पीने से वायुगुल्म नष्ट होता है।

(२) हर्र, अजवायन, जवाखार, भुनी हींग, काला नमक का चूर्ण ६ माशे शहद के साथ लेने से वायु-गुल्म नष्ट होता है।

(३) दंती हरीतकी—२५ बड़ी हर्र १६ सेर पानी में डाल कर पकाओ। पकते-पकते इसमें ८ तोला दंती और ८ तोला चित्रक पीस कर डाल दो। मंदाग्नि से पकाते हुए चतुर्थांश (४ सेर) जल रह जाने पर छान कर इस क्वाथ-जल में उपरोक्त २५ हर्रें गुठली निकाल कर पीस कर डालो तथा १६ तोला गुड़ डाल कर फिर पकाओ। औटाते-औटाते

जब २ सेर जल रह जाये तो पीपल, सोंठ, तज, पत्तज, नागकेशर, इलायची १-१ तोला का चूर्ण और ४ तोला शहद डाल कर अवलेह बनाकर रख लो। नित्य १ तोला अवलेह खाने से गुल्म, पांडु, संग्रहणी, शोथ, विषम ज्वर, कुष्ठ, अर्श, अरुचि, प्लीहा, हृदय रोग दूर होते हैं और साफ दस्त होता है।

२२. जलोदर

छोटी हर्र १ पाव, कुटकी १ पाव दोनों का महीन चूर्ण बना लें। ४-४ माशे चूर्ण गोमूत्र के साथ प्रातः, दोपहर और शाम को कुछ दिन तक सेवन करने से कष्टसाध्य जलोदर नष्ट हो जाता है। भोजन में केवल दूध दें; अन्न, पानी तथा नमक बिलकुल न दें। इससे शोथोदर भी नष्ट हो जायगा। बल वृद्धि के लिए स्वर्ण माक्षिक भस्म २-४ रत्ती दूध के साथ तीन बार दें।

२३. ज्वर (बुखार)

(१) बड़ी हर्र, अमलतास, पीपरामूल, नागर मोथा, कुटकी—पाँचों का जौकुट चूर्ण २½ तोला आध सेर जल में पका कर चतुर्थांश क्वाथ बनाकर पीने से वात-कफ-ज्वर, आमशूल नष्ट होकर मलशुद्धि होती तथा दीपन-पाचन होता है।

(२) बड़ी हर्र, नागरमोथा, धनिया, लाल चंदन, पद्माख, अडूसा, इन्द्र जौ, खस, गिलोय, अमलतास का गूदा, पाढ़, सोंठ, कुटकी—सबका जौकुट चूर्ण २½ तोला आध सेर जल में पका कर १ माशा पीपल का चूर्ण डाल कर पीने से त्रिदोष ज्वर, प्यास, दाह, खाँसी, प्रलाप, तन्द्रा दूर होती है। इस दीपन पाचन क्वाथ से मल-मूत्र, अधोवायु का रुकना, वमन, शोष, अरुचि दूर होती है।

(३) बड़ी हर्र, आँवला, चित्रक की छाल, पीपल, सेंधा नमक समान भाग ले चूर्ण बना कर ६ माशे की मात्रा में प्रातः सेवन करने से समस्त प्रकार के ज्वर दूर होते हैं। यह चूर्ण विरेचक, रुचिकारक, कफनाशक, अग्निदीपक तथा पाचक है।

(४) त्रिफलादि चूर्ण—हर्र १, बहेड़ा २, आँवला ३, इनका चूर्ण सेवन करने से विषम ज्वर, प्रमेह, शोथ, कफ, पित्त, दूर होते और अग्नि प्रदीप्त होती है। यह त्रिफला रसायन है। घी और शहद विसम भाग एकत्र कर त्रिफले का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से सम्पूर्ण नेत्रविकार दूर होते हैं।

२४. ज्वर, तृषा, छर्दि

हर्र, सोंठ, पीपल, कबीला, निशोथ समान भाग ले चूर्ण बना लें। फिर ५ भाग गुड़ और ५ भाग खाँड़ एकत्र मिलाकर चाशनी करें तथा उसमें उक्त चूर्ण मिलाकर पाक जमा दें या मोदक बना लें। ३ माशे से ६ माशे की मात्रा में शीतल जल के साथ सेवन करने से ज्वर, तृषा, छर्दि और पित्तज रोगों का नाश होता है।

शिरो रोग तथा मस्तिष्क रोग

२५. सिर दर्द

त्रिफला (हर्र, बहेरा, आँवला), हल्दी, चिरायता, गिलोय, नीम की छाल सब समान भाग का जौकुट चूर्ण २ तोला आध सेर जल में पकाकर चतुर्थांश क्वाथ कर १ तोला गुड़ डालकर पिलाने से और नास देने से मस्तक शूल, भौं, कनपटी की पीड़ा, आधा शीशी, सूर्यावर्त, अनन्तवात, सामान्य दंतशूल, दाँतों के हिलने की पीड़ा, रतौंधी, नेत्रों के पटलगत रोग, नेत्रों की सूजन और पीड़ा इन सब उपद्रवों सहित रोगों को यह क्वाथ दूर करता है।

२६. अनन्त वात (समलबाई)

पीली हर्र का बक्कल, धनिया १-१ छटाँक मिश्री आधी छटाँक—सबको अलग-अलग कूट पीसकर एकत्र

मिलाकर रख लें। प्रातः सायं ६-६ माशे चूर्ण जल के साथ १५ दिन सेवन करने से, समलबाई की पीड़ा, जो अचानक कहीं माथे पर कहीं कनपटी के पास होने लगती है और जिसका दुष्प्रभाव आँख पर भी पड़ता है, नष्ट हो जाती है। सम्भोग तथा वात-वर्द्धक पदार्थों का त्याग आवश्यक है। अनंतवात की अचूक महौषधि है।

२७. दारुणक रोग (रूसी, सीकरी) Dandruff

(१) छोटी हर्र और आम की गुठली की गिरी समान भाग ले चूर्ण कर दूध में पीस कर लेप करने से दारुण दारुणक रोग नष्ट होता है।

(२) भृंगराज तेल—हर्र, बहेरा, आँवला, लोहे का मल (कीट), सारिवा—इन पाँचों का कल्क (लुगदी) बनाकर, कल्क से चौगुना तिल का तेल और तेल के बराबर भाँगरे का रस डाल कर पकावें। तेल मात्र शेष रहने पर छान कर रख लें। यह तेल सिर में लगाने से दारुणक रोग दूर होता है, अकाल पलित केश काले होते हैं, तथा सिर, दाढ़ी, मूँछ के झड़े केश इसके मर्दन से पुनः आते हैं।

२८. पलित रोग (बाल श्वेत होना)

(१) हर्र २, आँवले ३, बहेड़ा १, आम की

गुठली की गिरी ५ तोला, लौह चूर्ण १ तोला एकत्र पीस कर लोहे के पात्र में रात भर रखने के बाद सिर में लेप करने से कुछ ही दिनों में बालों की सफेदी दूर होकर बाल काले हो जाते हैं।

(२) त्रिफला, नील के पत्ते, भाँगरा, लौह चूर्ण को भेड़ के मूत्र में पीस कर लेप करने से सफेद बाल काले हो जाते हैं।

२९. मस्तिष्क-दुर्बलता

२ तोला बड़ी हर्र की छाल और ५ तोला धनिया को बारीक पीस कर चूर्ण बनाकर चूर्ण के बराबर शक्कर मिलाकर रख लें। प्रातः सायं ६-६ माशे चूर्ण जल के साथ लेने से मस्तिष्क-दुर्बलता दूर होकर स्मरण शक्ति बढ़ती है। कब्ज दूर होकर आलस्य व सुस्ती मिटती और सारा दिन चित्त प्रसन्न रहता है।

नेत्र रोग

३०. नेत्र शूल

(१) हर्रें पानी में घिस कर नेत्रों के ऊपर लेप करने से वात, पित्त, कफ तीनों दोषों के प्रकोप से आई हुई आँख की पीड़ा दूर होती है।

(२) हर्र की छाल, सेंधा नमक, सोनागेरू को

रसौत के पानी में पीस कर नेत्रों के ऊपर लेप करने से नेत्रों की पीड़ा खुजली, लाली, सूजन आदि समस्त नेत्र-विकार दूर होते हैं।

(३) बड़ी हर्र, हल्दी, अफीम पानी में घिस कर नेत्रों के ऊपर लेप करने से नेत्रों की पीड़ा मिटती है।

(४) हर्र, बहेड़ा और आँवलासार गंधक एकत्र पानी में भिगो दें। दो घण्टे बाद इनको पानी से निकाल कर उस पानी को आँखों में डालने से आँखों की पीड़ा, सूजन और लाली दूर होती है।

(५) त्रिफला, पोस्त के डोंडे का कल्क बनाकर बाँधने से सब प्रकार की नेत्र पीड़ा दूर होती है।

३१. नेत्रस्राव (ढलका)

(१) हर्र, बहेड़ा, आँवला तीनों के बीजों की मींग को जल में पीस कर बत्ती बनायें। इस बत्ती को जल में घिस कर नेत्रों में आँजने से नेत्रों से पानी बहना तथा वातरक्त सम्बन्धी पीड़ा दूर होती है।

(२) पीली हर्र की गुठली की राख, माजूफल और सेंधा नमक तीनों समान भाग महीन पीस कर रख लें। प्रातः सायं सलाई द्वारा आँजने से नेत्रस्राव बन्द होता है।

३२. सर्वनेत्र रोग

(१) हर्र, सेंधा नमक, गेरू, रसौत चारों सम-भाग ले जल में पीस कर नेत्रों के ऊपर लेप करने से सब नेत्र रोग नष्ट होते हैं।

(२) हर्र, बहेड़ा, आँवला, गिलोय इन चारों का काढ़ा बनाकर उसमें पीपल का चूर्ण और शहद मिलाकर पीने से समस्त नेत्र रोग दूर होते हैं।

(३) हर्र, रसौत, बेल के पत्ते पीस कर लेप करने से सब नेत्र रोग नष्ट होते हैं।

३३. नेत्र दुख भंजन रसायन

(१) त्रिफला का चूर्ण ६ माशे, घी २ तोला और शहद १ तोला—एकत्र मिलाकर रात को चाटने से हर प्रकार का नेत्र विकार दूर होकर नेत्र ज्योति बढ़ती है।

(२) बड़ी हर्रें २ तोला, आँवला ४ तोला, मिश्री ८ तोला, मुलेठी, बंशलोचन, छोटी पीपल ८-८ माशे, लोह भस्म १ तोला—सब चीजें कूट पीस छान कर रख लें। ३ से ६ माशे की मात्रा में प्रातः सायं इस रसायन का सेवन करने से नेत्रों की लाली, खुजली, पानी बहना, तिमिर, फूला, अर्बुद, नेत्रदाह, मोतिया-

बिंद, नेत्रों की दुर्बलता दूर होकर नेत्र ज्योति बढ़ती है। दुर्बल दृष्टि वाले विद्यार्थियों या अधिक पढ़ने लिखने का कार्य करने वालों के लिये यह योग बहुत ही लाभप्रद है।

३४. कर्ण स्राव (कान बहना)

जैसे होमियोपैथिक और बायोकैमिक औषधियाँ खाने मात्र से ही सम्पूर्ण रोग नष्ट हो जाते हैं, वैसे ही इस आयुर्वेदिक योग के खाने मात्र से ही कान का बहना बन्द हो जाता है और कोई कष्ट नहीं होता।

छोटी हर्र, अजवायन, सौंफ, मेथी के बीज और काला नमक १-१ तोला—सबको कूट पीस कपड़छन चूर्ण बनाकर रख लें। १ से ३ माशे चूर्ण गर्म जल के साथ प्रातः सायं कुछ दिन सेवन करने से कान का बहना निश्चित रूप से बन्द हो जायगा। औषधि सेवन काल में स्नान करना और दही खाना निषेध है।

मुख तथा कंठ रोग

३५. मुखपाक

त्रिफला क्वाथ में शहद डालकर गण्डूष (कवल) धारण करने से मुख और जीभ के छाले आराम होते हैं।

३६. कण्ठ रोग

(१) हर्र की छाल का क्वाथ शहद के साथ पीने से गले का दर्द, टांसिल वृद्धि आदि सब कंठ रोग दूर होते हैं।

(२) हर्र की छाल, नीम की छाल, दारु हल्दी, इन्द्र जौ, तज का क्वाथ शहद डालकर पीने से सब कंठ रोग दूर होते हैं।

३७. स्वरभंग (गला बैठना)

(१) हर्र और सोंठ का चूर्ण गर्म पानी के साथ खाने से स्वरभंग दूर होता है।

(२) हर्र की छाल, वच और पीपल का चूर्ण गर्म जल के साथ सेवन करने से मेद और क्षय रोग का स्वरभंग ठीक होता है।

(३) हर्र की छाल, बच, ब्राह्मी, अडूसा और पिप्पली समभाग का चूर्ण ६ माशे शहद के साथ चाटने से बैठी हुई आवाज खुलती है।

३८. अपची

जब कंठमाला की गाँठ पक कर बहने लगती है, तो उसे अपची कहते हैं।

(१) हर्र का बक्कल, लाल चंदन, लाख, वच और कुटकी को पानी में पीस कर लुगदी बनाकर तेल

में पका कर उस तेल को लगाने से अपची रोग नष्ट होता है।

(२) हर्र का बक्कल, नीम की पत्तियाँ, सरसों और भिलावें समभाग जला कर राख को बकरे के मूत्र में सान कर लगाने से अपची का घाव अच्छा हो जाता है।

दंत रोग

३९. चलदंत (दाँत हिलना)

भद्र मुस्तादि गुटिका—हर्र की छाल, त्रिकटु, नागर मोथा, वायविडंग और नीम के पत्तों का चूर्ण गोमूत्र में सान कर गोली बनाकर छाया में सुखा लो। सोते समय एक गोली मुख में रखने से हिलते हुए दाँत सुदृढ़ हो जाते हैं।

४०. दंत रोग नाशक मंजन

(१) हर्र की छाल, सेंधा नमक, त्रिकटु और मोचरस के चूर्ण का मंजन करने से दाँतों की पीड़ा दूर होकर दाँत सुदृढ़ होते हैं।

(२) बड़ी हर्र का कोयला १ तोला, हीरा कसीस और नमक ३-३ माशे, कालीमिर्च २ माशे सबको बारीक पीस कर दाँतों पर मलने से मैले दाँत

साफ होकर चमकने लगते और मुख की दुर्गन्ध दूर होती है।

(३) हर्र, सोंठ, नागरमोथा, जली सुपारी, कालीमिर्च, लौंग, दालचीनी १-१ तोला, सेलखड़ी १० तोला सबको कूट-पीस छानकर १ तोला कपूर और आधा तोला पिपरमिन्ट पीस कर मिलाकर रख लें। सुबह-शाम दाँतों और मसूढ़ों पर मलकर कुल्ला करने से दाँतों का हिलना, कीड़े लगना, दंतशूल आदि दूर होकर दाँत स्वच्छ हो जाते और पायरिया रोग दूर हो जाता है।

वात रोग

४१. आमवात

(१) हर्र की छाल, सेंधा नमक, निशोथ, इन्द्रायन फल की बीजी, इन्द्रायण की जड़ और सोंठ का चूर्ण जल के साथ लोहे के पात्र में डाल कर मंदाग्नि से पकाओ। गाढ़ा होने पर जंगली बेर बराबर गोलियाँ बनाकर रख लो। नित्य १ गोली गरम जल के साथ खिला कर ऊपर से घृत युक्त चावलों का भात खिलाने से आमवात दूर होता है। आमवात में दही, दूध, गुड़, उर्द, मांस-मछली वर्जित हैं।

(२) हर्र १२ भाग, सेंधा नमक २ भाग, अजवायन २ भाग, अजमोद ३ भाग, सोंठ ४ भाग सबका बारीक चूर्ण बनाकर दही के पानी या कांजी या मट्ठा या घी अथवा गरम जल के साथ पीने से आमवात, गुल्म, हृदय की पीड़ा, मूत्राशय की पीड़ा, प्लीहा, ग्रन्थि-शूलादि, बवासीर, अफरा, मलबन्ध, उदर रोग, कटि-पीड़ा तथा मूत्राशय के रोग नष्ट होते हैं। यह वैश्वानर चूर्ण वायु को योग्य मार्ग में संचार कराने वाला है।

४२. आमवात, भगंदर, शोथ, अर्श आदि

हर्र, बहेरा, आँवला चूर्ण १-१ सेर, गूगुल १ सेर, सरसों का तेल १ सेर—सबको २४ सेर जल के साथ चूल्हे पर चढ़ा कर पकाओ। कुछ गाढ़ा होने पर पारागंधक की कज्जली ४ टंक, सोंठ, मिर्च, पीपल, त्रिफला, नागरमोथा, देवदारु २-२ टंक और १०० शुद्ध जमाल गोटे—इन सबका चूर्ण उस क्वाथ में डालकर सुरक्षित रख लो। नित्य १ माशे की मात्रा में गर्म जल के साथ सेवन करने से आमवात, वात रोग, भगन्दर, शोथशूल, अर्श ये सब रोग दूर होकर क्षुधा बढ़ती तथा वीर्य-वृद्धि होती है।

४३. आमवात, गृध्रसी, अर्दित

हर्र की छाल का चूर्ण ६ माशे रेंड़ी के तेल के साथ सेवन करने से आमवात और गृध्रसी रोग (टांग की एक विशेष प्रकार की पीड़ा), व अर्दित नष्ट होते हैं।

४४. अपतंत्र

हर्र का बक्कल, वच, रास्ना, सेंधा नमक, अमलवेत सब सम भाग का चूर्ण ६ माशे की मात्रा में घी या अदरख के रस के साथ सेवन करने से अपतंत्र दूर होता है।

४५. वातरक्त

(१) हर्र का चूर्ण ६ माशे तक्र या जल के साथ सेवन करने से कफाधिक्य वातरक्त नष्ट होता है।

(२) बड़ी हर्र का चूर्ण गुड़ के साथ लेने से वातरक्त दूर होता है।

(३) त्रिफला, पटोल पत्र, कुटकी, गिलोय, शतावर—सबका जौकुट चूर्ण २½ तोले आधा सेर पानी में पकाकर चतुर्थांश क्वाथ बनाकर पीने से दाहयुक्त वातरक्त आराम होता है।

(४) किशोर गुग्गुल—शुद्ध भैंसा गुग्गुल, हर्र छाल, बहेरा-छाल, आँवला, प्रत्येक १-१ सेर, गिलोय १६

तोला—इन सबका चूर्ण ६४ सेर पानी में पकाओ। आधा जल रह जाने पर छान लो। फिर कड़ाही में डालकर पकाओ। कुछ गाढ़ा हो जाने पर पारागंधक की कज्जली, २ तोला, वायविडंग १ तोला का चूर्ण उक्त क्वाथ में डाल दो और भली-भाँति मिला दो। नित्य ४ से ८ माशे की मात्रा में यह औषधि खाकर ऊपर से मंजिष्ठादि क्वाथ पीने से वातरक्त, श्वास, गुल्म, कुष्ठ, शोथ, व्रण, उदर रोग, पांडु, प्रमेह, मंदाग्नि आदि समस्त व्याधियाँ दूर होती हैं। इस गुग्गुल के सेवन काल में आग तापना, धूप में घूमना, श्रम करना, मार्ग चलना, मैथुन, खटाई, मांस, दही, नमक, तेल का सेवन अहितकर है।

४६. गृध्रसी

हर्र छाल, सुरंजान शीरी, इन्द्रायन का गूदा, सनाय, शुद्ध एलवा १-१ तोला, गूगुल शुद्ध ६ माशे और शुद्ध कुचला ४ माशे—सबको कूट छान गूगुल मिलाकर घीकुवाँर के रस में घोट कर चने बराबर गोलियाँ बना लें। २-२ गोली गरम दूध या गरम जल के साथ सुबह-शाम लेने से गृध्रसी में शीघ्र ही उत्तम लाभ होता है।

४७. शोथ (सूजन)

(१) हर्र, हल्दी, भारंगी, गिलोय, चित्रक, पुनर्नवा, देवदारु, सोंठ—इन सबका जौकुट चूर्ण २½ तोला, आध सेर जल में पकाकर चतुर्थांश क्वाथ बनाकर पीने से पेट, हाथ, पैर और मुख में हुई सूजन शीघ्र ही दूर हो जाती है।

(२) अगस्ति पाक—हर्र १२ तोला, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल ४-४ तोला, दालचीनी और तेज-पात २-२ तोले—इन सबका महीन चूर्ण कर, ३२ तोले गुड़ की चाशनी में मिलाकर पाक या मोदक बना लें। आधा तोला से १ तोला तक पाक पथ्यपूर्वक नित्य सेवन करने से सूजन, बवासीर, संग्रहणी, खाँसी और उदावर्त का नाश होता है।

(३) दशमूल हरीतकी—२५६ तोला दशमूल के क्वाथ में १०० हर्रों को पकावें। जब जल सूख जाय, तब हर्रों को निकाल कर उनकी गुठली निकाल कर सिल पर पीस लें और उसे ५ सेर गुड़ की चाशनी में मिला दें। अथवा हर्रों के चूर्ण को दशमूल-क्वाथ और गुड़ के साथ एकत्र पका कर उसमें—सोंठ, मिर्च, पीपल, जवाखार ४-४ तोले, दालचीनी, इलायची, तेजपात १-१ तोला मिलाकर नीचे उतार

लें। ठंडा होने पर उसमें ३२ तोले शहद मिलाकर रख लें। ६ माशे से १-२ तोले की मात्रा में सेवन करने से दुस्तर शोथ, ज्वर, अरुचि, प्रमेह, अर्श, कुष्ठ, पांडु और उदर-रोग नष्ट होते हैं।

४८. मेदवृद्धि

त्रिफला के क्वाथ में शहद मिलाकर पीने से मेद-वृद्धि (चर्बी बढ़कर मोटापा आना) दूर होती है। इसी प्रकार ६ माशे हर्र का चूर्ण फाँक कर गर्म जल में शहद और नींबू का रस मिलाकर पीने से मेद-वृद्धि नष्ट होती है। मेदवृद्धि वाले को अधिक दूध, दही, घी, चावल, आलू और चीनी खाना अहित-कर है।

पित्त रोग

४९. रक्तपित्त

(१) हर्र का चूर्ण शहद में मिलाकर चाटने से रक्तपित्त में लाभ होता है।

(२) हर्र, अड़ूसा और दाख के काढ़े में शहद और मिश्री मिलाकर पीने से रक्तपित्त, श्वास और दारुण खाँसी दूर होती है।

(३) बड़ी हर्र, गिलोय और मुनक्के ६-६ माशे कुचल कर पाव भर पानी में पका कर चतुर्थांश रहने

पर उतार कर शीतल कर इसमें १ तोला शर्बत अड़ूसा या शहद या मिश्री मिलाकर पीने से घोर ऊर्ध्वगामी रक्तपित्त नष्ट हो जाता है।

(४) हर्र, बहेड़ा, आँवला, बेर की गुठली की गिरी, सोंठ, मिर्च, पीपल प्रत्येक का चूर्ण ८-८ तोले, धान की खील ४८ तोले तथा इलायची, दालचीनी और तेजपात ४-४ तोले, बंशलोचन ३२ तोले और अम्लवेत १६ तोले—इन सबका महीन चूर्ण करें। चूर्ण से दुगुनी खाँड़ की चाशनी कर उसमें सब चूर्ण मिलाकर पाक जमा लें या मोदक बना लें।

६ माशे की मात्रा में बकरी के दूध या गोदुग्ध के साथ सेवन करने से रक्तपित्त, राजयक्ष्मा, ज्वर, खाँसी और वमन का नाश होता है। हृदय रोग में भी लाभदायक है।

(५) हर्रों को प्रति-दिन अड़ूसा के पत्तों के रस में खरल करो और रात को सुखा लो। सबेरे फिर ताजे अड़ूसापत्र रस में खरल करो और रात को सुखा लो। इस प्रकार ७ दिन तक हर्रों को अड़ूसापत्र-स्वरस में खरल कर रख लो। ५-६ माशे की मात्रा में यह हर्र चूर्ण शहद के साथ सेवन करने से रक्तपित्त निश्चय नष्ट हो जाता है।

५०. पांडु-कामला

(१) हर्र का चूर्ण ६ माशा, समान भाग गुड़ मिलाकर प्रातः, दोपहर और शाम को खाने से पांडु-रोग दूर होता है।

(२) त्रिफला चूर्ण ६ माशे से १ तोले तक शहद के साथ चाटने से पांडु-कामला रोग अच्छा हो जाता है।

(३) त्रिफलादि क्वाथ—हर्र, बहेड़ा, आँवला, गिलोय, कुटकी, नीम की छाल, चिरायता, अडूसा के पत्ते—इन आठ औषधियों का जौकुट चूर्ण २½-३ तोले आध सेर पानी में पका कर चतुर्थांश क्वाथ बनाकर १ तोला शहद मिलाकर पीने से पांडु-कामला नष्ट होता है।

(४) त्रिफला, त्रिकटु, नागकेशर, वायविडंग, चित्रक समभाग, लौह भस्म ९ भाग—इन सबका चूर्ण १ से ३ माशे शहद के साथ चाटने से पांडु-कामला, अर्श, कुष्ठ और हृद्रोग दूर होते हैं।

(५) बड़ी हर्र का चूर्ण गुड़ के साथ खाने से पांडु की सूजन मिटती है।

५१. भ्रम (चक्कर, घुमनी)

(१) हर्र और आंवलों के क्वाथ में घृत डालकर पीने से घुमनी दूर होती हैं।

(२) बड़ी हर्र का बक्कल, सोंठ, सौंफ, पीपल १-१ तोला—सबको एकत्र पीस कर ६ तोला पुराना गुड़ मिलाकर १-१ तोले की गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली दिन में तीन बार ताजे पानी के साथ खाने से सिर में चक्कर आना, सिर घूमने के कारण वमन होना, सिर में दर्द होना आदि शीघ्र दूर होता है।

(३) हर्र, सोंठ, पीपल, शतावर ४-४ तोला, गुड़ २४ तोला—सबको कूट-पीस बेर बराबर गोली बनाकर सुबह, दोपहर, शाम को एक गोली पानी के साथ लेने से भ्रम (चक्कर आना) दूर होता है।

५२. शीतपित्त

(१) हर्र का चूर्ण या त्रिफला का चूर्ण शहद के साथ खिलाने से शीतपित्त आराम होता है।

(२) शीतपित्त में त्रिफला, गुग्गुल और पीपल का विरेचन देना बहुत लाभप्रद है।

कफ रोग

५३. प्रतिश्याय (जुकाम)

(१) बड़ी हर्र का छिलका और सोंठ आधा-आधा पाव—दोनों को कूट-पीस कपड़छन कर पाव भर गुड़ मिलाकर झड़बेरी बेर बराबर गोलियाँ बना लो।

यदि गुड़ सूखा हो तो उसमें थोड़ा पानी डालकर गोलियाँ बनाओ। दो-दो गोली सुबह-शाम चाय या पानी के साथ लेने जुकाम शीघ्र अच्छा हो जाता है।

(२) हर्र काबुली, हर्र देशी, आँवला, मुनक्का, मगज, धनिया, गुलाब के फूल, गावजवाँ प्रत्येक ६-६ माशे, मगज पेठा और खसखस १-१ तोला—सबको महीन पीसकर महीन छेद की चलनी से छान लें और १ तोला बादाम का तेल मिलाकर आध सेर खाँड़ की चाशनी में मिलाकर थाली में फैलाकर बर्फी जैसे टुकड़े काट कर रख लें।

नित्य प्रातः-सायं १-१ तोले की मात्रा में इस पाक का सेवन करने से बार-बार होने वाला जुकाम और नजला आदि कफ विकार नष्ट हो जाते हैं।

५४. खाँसी

(१) बड़ी हर्रें, सोंठ, नागर मोथा समान भाग ले कूट-पीस कपड़छन चूर्ण बना लें। चूर्ण से दुगुना पुराना गुड़ भली भाँति मिलाकर झड़बेरी बेर बराबर गोलियाँ बनाकर रख लें। नित्य एक-एक कर दिन भर में ५-६-७ गोलियाँ चूसने से हर प्रकार की प्रबल खाँसी शीघ्र ही अच्छी हो जाती है।

(२) छोटी हर्र, हल्दी, अजवायन, अकरकरा सभी समान भाग ले चने बराबर टुकड़े कर एक कटोरे में रख दें। फिर ५० बड़े बँगला पान लेकर उनके बीच में उक्त दवा भर कर उन पानों के ऊपर गेहूँ के आटे या चिकनी मिट्टी का लेप चढ़ाकर गोला सा बना लें और इस गोले को कंडों की आग में पका लें। आटा या मिट्टी लाल हो जाने पर उसे हटा कर पान सहित सारी औषधि लोहे के इमामदस्ते में डालकर कूटें और महीन छेदों की छलनी से छान लें। मोटा अंश तवे पर रखकर सेंक कर फिर कूटें और छान लें। मोटे अंश को फिर तवे पर सेंक कर कूट-पीस छान लें। इस प्रकार कई बार सेंकते-कूटते छानते हुए चूर्ण बनाकर शीशी में सुरक्षित रख लें। १ माशे से ३ माशे तक दवा पान के रस या शहद और पान के रस के साथ नित्य तीन-चार बार सेवन करने से हर प्रकार की खाँसी, जुकाम और श्वास में शीघ्र अच्छा लाभ होता है। परीक्षित गुणकारी दवा है। उदरशूल और उदरकृमि में भी यह दवा लाभप्रद है।

(३) हर्र, आँवला और वायविडंग ४-४ तोला, शोथ १२ तोले—सबका महीन चूर्ण कर २४ तोले

गुड़ की चाशनी में मिलाकर पाक जमा दें या मोदक बना लें। ३ से ६ माशे की मात्रा में प्रातः काल इस मणि-भद्र मोदक का सेवन करने से खाँसी, क्षय, अर्श, कुष्ठ, भगंदर, प्लीहा, जलोदर नष्ट हो जाते हैं। किसी पथ्य-परहेज की आवश्यकता नहीं है। यह पाक बल-वृद्धिकारक है।

(४) हर्र, पीपल, सोंठ, कालीमिर्च का समान भाग चूर्ण कर, चूर्ण को दुगुने गुड़ की चाशनी में मिलाकर पाक जमा दें या मोदक बना लें। ३ माशे की मात्रा नित्य दो-तीन बार सेवन करने से खाँसी नष्ट हो जाती है और जठराग्नि प्रदीप्त होती है।

५५. श्वास (दमा)

(१) हर्र, बहेड़ा, आँवला और छोटी पीपल का समभाग चूर्ण शहद में मिलाकर चाटने से श्वास, कास तथा ज्वर में आशातीत लाभ होता है।

(२) १ सेर भारंगी को ४ सेर पानी में औटा कर उसका चतुर्थांश क्वाथ बनाकर छान लो। फिर उस क्वाथ-जल में १¼ सेर गुड़ डाल कर पकाओ। चाशनी बनते समय ही १ सेर हर्र के बक्कल का चूर्ण मिला दो। शीतल होने पर इसमें ६ तोला शहद और सोंठ, मिर्च, पीपल, तज, पत्रज, नागकेशर

१-१ तोला, जवाखार २ तोला का चूर्ण चाशनी में मिला दो। नित्य आधा तोला इस अवलेह का सेवन करने से श्वास, कास, क्षय, अर्श, गुल्म और उदर रोग दूर हो जाते हैं।

(३) हर्र, भारंगी, दशमूल की दवायें प्रत्येक ४००-४०० तोले लेकर चौगुने जल में पका कर चतुर्थांश जल रहने पर उतार कर कपड़े से छान कर उसमें ४०० तोले गुड़ और उसी क्वाथ में पूर्वोक्त हर्र डाल कर मंदाग्नि से पकाओ। पकते-पकते अवलेह हो जाने पर उतार कर शीतल होने पर २४ तोले शहद तथा सोंठ, मिर्च, पीपल, दालचीनी, तेजपात, इलायची ४ तोला और जवाखार २ तोला का चूर्ण मिलाकर रख लो। इसमें से प्रतिदिन १ हर्र और २ तोले अवलेह का सेवन करने से महादारुण श्वास, ५ प्रकार की बवासीर, अर्श, अरुचि, गुल्म, अतिसार और क्षय रोग नष्ट होते हैं। यह भारंगी गुड़ स्वर और वर्ण को उत्तम करने वाला और जठराग्नि को दीपन करने वाला है।

५६. राजयक्ष्मा

(१) हर्र, बहेरा, आँवला, सोंठ, मिर्च, पीपल, बेर की गुठली की गिरी प्रत्येक ८-८ तोले, कपूर

१ तोला, धान की खील ४८ तोले, इलायची, दालचीनी, तेजपात ४-४ तोले, बंशलोचन ३२ तोले और अमलवेत १६ तोले—इन सबका चूर्ण कर लें। पश्चात् सबसे दुगुनी खाँड़ की चाशनी में चूर्ण को मिलाकर पाक जमा दें या मोदक बना लें। १ से २½ तोले की माता में इस पाक का सेवन करने से राजयक्ष्मा, रक्तपित्त, वमन, खाँसी और ज्वर नष्ट होते हैं। यह पाक हृदय के लिये भी हितकारी है।

(२) भृगुहरीतकी—जड़, छाल, पत्तों समेत कटेरी का सर्वांग ४०० तोला, हर्र १०० ले दोनों को एक पात्र में डाल कर १०२४ तोले जल में पकावें। पकते-पकते चतुर्थांश जल शेष रहने पर उतार कर क्वाथ को कपड़े से छान लें। फिर छने हुए क्वाथ में पूर्वोक्त पकाई हुई हर्र १०० नग और गुड़ ४०० तोले डालकर पकावें। जब भलीभाँति पककर अवलेह के समान तैयार हो जाय तब उतार कर शीतल कर उसमें—सोंठ, मिर्च, पीपल, इलायची, दालचीनी, तेजपात, नागकेशर ४-४ तोले का चूर्ण और शहद २४ तोले मिला दें।

शरीर के अग्निबलानुसार इस अवलेह का विधिपूर्वक सेवन करने से वातज, पित्तज, कफज, द्वंदज, त्रिदोषज, क्षतज, क्षयज, श्वास, पीनस और ग्यारह लक्षणों वाला महाभयंकर राजयक्ष्मा नष्ट होता है। यह भृगुऋषि की कथित 'भृगुहरीतकी' प्रख्यात रसायन है।

(३) वासा हरीतकी अवलेह—अडूसा (वासा) की जड़ की छाल या ताजे पत्ते ४०० तोले जल से धोकर और कूट कर अठगुने पानी में कलईदार कड़ाही में पकाओ। चतुर्थांश जल शेष रहने पर उतार कर ठंडा होने पर कपड़े से छान कर, उसमें गुठली निकाली हुई बड़ी हर्रों का चूर्ण २५६ तोला और चीनी ४०० तोला डाल कर पकाओ। पकाते समय लकड़ी की करछी से चलाते रहो। जब अवलेह जैसा हो जाय तो नीचे उतार लो। ठंडा होने पर उसमें ३२ तोला शहद और बंशलोचन १६ तोला, छोटी पीपल २ तोला, दालचीनी ४ तोला, छोटी इलायची ४ तोला, तेजपात ४ तोला, नागकेशर ४ तोला और काकड़ासिंगी ४ तोला—इन सबका कपड़छन चूर्ण और घी एक सेर मिलाकर काँच या चीनी मिट्टी के पात्र में रख लो।

इस अवलेह के सेवन से क्षय, श्वास, कास, रक्तपित्त और प्रतिश्याय में बहुत लाभ होता है। नये

या पुराने कफरोग या खाँसी या श्वास नलिका की सूजन में इस अवलेह का सेवन बहुत लाभप्रद है। इसके प्रयोग से कफ पतला होकर शीघ्र बाहर निकल जाता है, जिससे खाँसी और श्वास में आराम मिलता है। कफ रोगों में हृदय में बहुत शिथिलता आ जाती है, जो इस अवलेह के सेवन से दूर हो जाती है। इस अवलेह के सेवन से रक्त-स्राव, रक्तयुक्त दस्त, अर्श, क्षय, रक्तप्रदर, रक्तपित्त आदि रोग अच्छे हो जाते हैं। बार-बार होने वाले जुकाम या पुराने जुकाम या खूनी बवासीर में बहुत लाभ होता है। बवासीर के रोगियों को प्रायः कब्ज की शिकायत रहती है, इस अवलेह के सेवन से कब्ज दूर हो जाता है।

५७. हृदय रोग

(१) हर्र, वच, रास्ना, पीपल, सोंठ, कचूर, पीपरामूल सब समभाग का चूर्ण ३ माशे की मात्रा में मधु के साथ सबेरे शाम खाने से हृदय रोग नष्ट होता है।

(२) हर्र की छाल, सोंठ, कचूर, कुटकी, पीपरामूल समभाग का जौकुट चूर्ण २½ तोले, आध सेर जल में पकाकर चतुर्थांश क्वाथ बना कर १ तोला की डालकर पीने से हृदय रोग दूर होता है।

५८. मूत्रकृच्छ्र व मूत्रदाह

छोटी हर्र, धमासा, अमलतास का गूदा, गोखरू, पाषाण भेद—सब समभाग का जौकुट चूर्ण २-२½ तोला, आध सेर जल में पकाकर चतुर्थांश क्वाथ बना कर शहद के साथ पीने से मूत्रदाह, मूत्रावरोध तथा वायु के अवरोध युक्त मूत्रकृच्छ्र दूर होता है।

गुदा रोग

५९. अर्श (बवासीर)

(१) हर्र का चूर्ण गुड़ के साथ सेवन करने से पित्त, कफ, कंडू और अर्श का नाश होता है।

(२) घी में भुनी हर्र को गुड़ और पीपल-चूर्ण के साथ खाने से मलावरोध दूर होता और अर्श में लाभ होता है।

(३) छोटी हर्र ५ तोला कुकरौंधा के पत्तों के रस में भिगो दें। प्रति दिन पहले का रस निकाल कर ताजा रस डालते रहें। १५ दिन के बाद रस अलग कर हर्रों को धूप में सुखा लें। नित्य १-१ हर्र खाने से खूनी बादी दोनों प्रकार की बवासीर नष्ट हो जाती है।

(४) ८ तोला काला तिल हर्रों के क्वाथ में खूब

खरल करें। इतना घोटें कि तिलों का छिलका पिस कर क्वाथ में बिलीन हो जाय। इसे धूप में सुखा कर चूर्ण कर लें। इस चूर्ण में चित्रकमूल चूर्ण १ तोला, हर्र चूर्ण २ तोला और गुड़ २ तोला मिलाकर इसकी ५० मात्रा बनायें। गर्म जल के साथ सेवन करने से मल कड़ा नहीं पड़ता और प्रतिहारिणी सिरा का रक्त-संवहन व्यवस्थित होता है, जिससे गुद-नलिका के रक्त-स्रोतों का दबाव कम होता है। यह योग सगर्भा को त्याज्य है।

(५) १ सेर त्रिफला चूर्ण को ९ सेर गोमूत्र में पकायें। गाढ़ा होने पर उतार कर जंगली बेर बराबर गोलियाँ बना कर रख लें। प्रातः सायं ४-४ गोली गोदुग्ध या गोमूत्र के साथ लेने से रक्तार्श, उदरशोथ, उदर वायु, कब्ज, अफरा, अजीर्ण आदि उदर रोग नष्ट होते हैं।

(६) बड़ी हर्र का छिलका, गुठली रहित आँवला १०-१० तोला, रसौत ५ तोला—तीनों को कूट-पीस छान लें और स्वच्छ शीशी में सुरक्षित रख लें। ६-६ माशे की मात्रा में प्रातः सायं दूध या जल के साथ सेवन करने से हर प्रकार की बवासीर नष्ट हो जाती है। भोजन के बाद दोनों समय २-२ तोले

अभयारिष्ट समान भाग पानी मिलाकर लेना अधिक लाभप्रद है।

(७) छोटी हर्र २ तोला, बड़ी हर्र का छिलका ६ तोला, नीम की निबौली, बकायन की निबौली २-२ तोला, सोना गेरू २½ तोला, शुद्ध हींग भुनी २½ तोला, सुहागे का लावा २ तोला, सनाय १½ तोला—इन सबको चूर्ण कर मूली के रस में तीन दिन खरल कर झड़बेरी बेर बराबर गोलियाँ बना लें।

१ गोली सबेरे गर्म गोदुग्ध से, दोपहर को एक गोली शीतल जल से और रात को सोते समय १ गोली गर्म दूध के साथ लेने से रक्तार्श से रक्त गिरना दो-तीन दिन के प्रयोग से ही बन्द हो जाता है। रक्तार्श की गुणकारी परीक्षित औषधि हैं।

(८) कांकायन मोदक पाक—हर्र २० तोला, जीरा, कालीमिर्च, पीपल ४-४ तोला, पीपरामूल ८ तोला, चव्य १२ तोला, चित्रकमूल १६ तोला, सोंठ २० तोला, जवाखार ८ तोले, शुद्ध भिलावा ३२ तोले, जमीकंद (सूरन) ६४ तोले—सबका चूर्ण बनाकर रख लें। फिर ५ सेर गुड़ की चाशनी बनाकर उक्त चूर्ण मिलाकर पाक जमा लें या मोदक बना लें। ३ से ६ माशे की मात्रा प्रातः काल खाकर ऊपर से

छाछ या पानी पियें। इसके प्रयोग से बिना शल्य क्रिया बवासीर के मस्से नष्ट हो जाते हैं। बवासीर के विशेष गुणकारी पाक है। इससे जठराग्नि प्रदीप्त होती है। पांडु-संग्रहणी में भी लाभप्रद है।

(९) हर्र का चूर्ण, कडुवी तुम्बी का चूर्ण और समुद्र फेन समभाग पीस कर जल के संयोग से बत्ती बनाकर रखने से अर्श के मस्से सूख जाते हैं।

६०. भगन्दर

(१) गुग्गुलासव—हर्र ५ सेर, बहेड़ा ५ सेर, आँवला १३ छटाँक, गुग्गुल १६ तोला, दालचीनी, बड़ी इलायची, पीपरामूल, चव्य, चित्रकमूल, अजवायन, सोंठ, पीपल, मिर्च, तालीसपत्र, नागरमोथा, नागकेशर, कायफल, प्रत्येक १६-१६ तोला—सबको जौकुट १३ सेर जल में क्वाथ करें। ३¼ सेर जल रहने पर छान कर गुड़ १० सेर, धाय के फूल १३ छटाँक, मुनक्का आधा सेर, अनार दाना आधा सेर प्रत्येक द्रव्य का चूर्ण क्वाथ में डाल कर मिट्टी के चिकने पात्र में गुड़ घोल कर शेष औषधियों का चूर्ण डाल कर पात्र का मुख बन्द कर एक मास तक संधान करने के बाद छान कर बोतलों में रख लें। आधा तोला से ४ तोला तक आसव समान भाग जल के साथ दोनों समय

सेवन करने से भगन्दर, प्लीहा, उदर रोग, उरुस्तम्भ, कामला, श्वास, कास, कृमि, कुष्ठ और प्रमेह नष्ट होते हैं। इसे संधान विधि समाप्त होने के पश्चात् छान कर ६ मास पर्यंत गन्ने के सिरके के पात्र में रखने का विधान है। इस प्रकार १+६=७ मास पश्चात् यह प्रयोग-योग्य होता है। भोजन से पूर्व, भोजन के मध्य और प्रत्येक ग्रास खाने के बाद इसका सेवन करना चाहिए।

(२) खदिरादि क्वाथ—हर्र, बहेड़ा, आँवला, खैरसार इन चारों का जौकुट चूर्ण २½-३ तोला, आध सेर पानी में पकाकर चतुर्थांश क्वाथ कर उसमें भैंस का घी और बायविडंग का चूर्ण मिलाकर पीने से भगंदर रोग दूर होता है।

(३) त्रिफला, भैंसा गूगुल, वायविडंग का क्वाथ नित्य पीने और जब-जब प्यास लगे खैर का रस मिला जल पीने से भगंदर अवश्य नष्ट हो जाता है।

(४) त्रिफला, बायविडंग, खैरसार १-१ भाग, पीपल २ भाग सबका चूर्ण कर ६ माशे चूर्ण शहद और तिल के तेल में मिलाकर चाटने से कृमि, कुष्ठ, प्रमेह और क्षय नष्ट हो जाता तथा भगंदर और नाड़ी व्रण (नासूर) भर जाता है।

(५) २½ तोला त्रिफला आध पाव पानी में पकावें। एक छटाँक शेष रहने पर छानकर शीशी में रख दें। इस त्रिफला क्वाथ में बिलाव की हड्डी घिसकर उसमें बत्ती भिगो कर भगंदर के अंदर रखने से भगंदर, नासूर और दूषित व्रण शीघ्र अच्छे हो जाते हैं।

पुरुष रोग

६१. प्रमेह

(१) हर्र, वच, खस, गिलोय का क्वाथ शहद मिलाकर पीने से या हर्र, कायफल, मोथा, लोध का क्वाथ कर शहद मिलाकर पीने से कफज प्रमेह नष्ट होता है।

(२) हर्र, आँवला, मोथा, खस का क्वाथ बनाकर शहद मिलाकर पीने से पित्तज प्रमेह दूर होता है।

(३) त्रिफला, कुड़ा की छाल, दारु हल्दी, नागरमोथा, बीजबन्द का क्वाथ बनाकर शहद मिलाकर पीने से हर प्रकार का प्रमेह अच्छा होता है।

(४) त्रिफला, दारु हल्दी, नागरमोथा, देवदारु का काढ़ा शहद मिलाकर पीने से प्रमेह नष्ट होता है।

(५) त्रिफलादि पाक—त्रिफला चूर्ण आध पाव लेकर पाव भर जल में भिगो दें। दूसरे दिन उसे एक पाव

घी में मंदाग्नि पर भून लें। फिर उसमें—पोहकर मूल, चित्रक, सोंठ, मिर्च, पीपल, इलायची, मोथा, तज, पत्रज प्रत्येक ८-८ माशे, धनिया छिलका रहित २ तोले सबका चूर्ण मिलावें। फिर १ सेर मिश्री की चाशनी बना उसमें ६-६ माशे केशर और शिलाजीत मिलाकर उक्त चूर्ण डालकर पाक जमा दें। यदि अवलेह बनाना हो तो उसमें १ पाव शहद मिलाकर रख लें।

दो-दो तोला दोनों समय सेवन करने से सब प्रकार के प्रमेह, सिर के सब रोग, नेत्राभिश्यंद, प्रतिश्याय और रक्त विकार दूर हो जाते हैं।

६२. बलवीर्य वृद्धि हेतु

त्रिफलादि पाक—१ सेर त्रिफला चूर्ण १ पाव घी में भूनकर उसमें—चित्रक, छोटी इलायची, मोथा, तज प्रत्येक ७-७ माशे, पोहकर मूल, शिलाजीत ६-६ माशे, त्रिकुटा, धनिया की मींग २-२ तोले सबका चूर्ण, किशमिस, मुनक्का पिसे हुए ५-५ तोले मिला दें। फिर १ सेर मिश्री की चाशनी (३ माशे केशर मिली हुई) में उक्त द्रव्य मिलाकर पाक जमा दें या अवलेह जैसा रखें।

२-२ तोले की मात्रा में प्रातः सायं दूध के साथ

लेने से वीर्य की शुद्धि और वृद्धि होती है तथा नेत्र ज्योति बढ़ती है।

६३. शीघ्रपतन

बड़ी हर्र, असगंध, शतावर, मुलेठी, गोखरू, कालीमिर्च, ईसबगोल की भूसी—सब समान भाग कूट-पीस छान कर शीशी में रख लें। सुबह-शाम ४-४ माशे दवा दूध के साथ लेने से वीर्य पुष्ट होता, स्वप्नदोष रुकता और शीघ्रपतन दूर होता है। ४० दिन तक संयम-नियम के साथ सेवन करें।

६४. अष्ठीला या प्रोस्टेट ग्लैण्ड-वृद्धि (Enlargment of Prostate Gland)

यह व्याधि प्रायः वृद्धों को होती है और आधुनिक डाक्टर इसके लिए शल्य क्रिया की सलाह देते हैं। किन्तु इसका शस्त्र कर्म एक गम्भीर शल्यकर्म है और सदैव सफलता में आशंका रहती है। ग्रंथि की वृद्धि से बार-बार मूत्र-प्रवृत्ति होती है, किन्तु मूत्र में अवरोध उत्पन्न होता है, जिससे मुष्क, वंक्षण, कटि और वस्ति प्रदेश में शूल होता है।

छोटी हर्र का चूर्ण १६ भाग, तुत्थ (तूतिया) १ भाग दोनों को नींबू के रस की ७ भावनायें देकर चूर्ण को सुरक्षित रख लें। २ रत्ती से ४ रत्ती तक

शहद के साथ दिन में तीन बार प्रयोग करने से एक-डेढ़ मास में ३-४ अंगुलवृद्ध ग्रन्थि भी प्राकृतावस्था में आ जाती है। परीक्षित लाभदायी योग है।

६५. फिरंगवात

उपदंश-ग्रस्त स्त्री से मैथुन करने, उपदंश-ग्रस्त रुग्ण के मूत्र पर पेशाब करने, उपदंश-ग्रस्त के साथ भोजनादि के संसर्ग से वातकुपित होकर फिरंगवात रोग उत्पन्न करता है। अथवा क्षीण पुरुष के अत्यंत मैथुन करने पर त्रिदोष कुपित होकर आगन्तुक संज्ञक फिरंग-वात उत्पन्न करता है।

फिरंगवात होने पर शरीर में ददौरे पड़कर उनमें चींटी काटने के समान पीड़ा हो, पीठ और जाँघ में पीड़ा तथा शोथ हो तो समझना चाहिए कि फिरंगवात शरीर की संधियों और नसों में प्रविष्ट हुआ है। यदि लिंगेन्द्रिय पर थोड़ी फुंसियां और फटने के चिह्न हों तो समझना चाहिए कि फिरंगवात त्वचा पर ही है और यदि ये सब लक्षण बहुत समय तक रहें तो समझना चाहिए कि फिरंगवात त्वचा के भीतर और बाहर सर्वत्र प्रविष्ट हो गया है।

शरीर क्षीणता, बलनाश, अग्निमांद्य तथा रक्त मांस नष्ट होकर शरीर अस्थि पंजर मात्र हो जाये तथा

नाक गल जाये, तो इन उपद्रवों से ग्रस्त रोगी का बचना बहुत कठिन है ।

७ टंक हर्र की छाल, ८ टंक नींबू के पत्ते, ७ टंक आँवला, १ टंक हल्दी और १ टंक पारा—इन सबको खूब खरल कर रख लें । प्रतिदिन ४ माशे की मात्रा में शीतल जल के साथ सेवन करने से एक सप्ताह में आन्तरिक और बाह्य दोनों ओर की फिरंगवात दूर होती है ।

६६. उपदंश (आतशक, गर्मी)

(१) छोटी हर्र ४ तोला, नीलाथोथा ३ माशा—दोनों का चूर्ण नींबू के रस में ७ दिन खरल कर चने बराबर गोली बनाकर नित्य १ गोली ठंडे जल के साथ खाने और पथ्य में चावल का भात, गेहूँ की रोटी, मूँग की दाल और गोघृत लेने से उपदंश २१ दिन में नष्ट हो जाता है ।

(२) नीम की पत्तियों का चूर्ण १६ भाग, हर्र चूर्ण २ भाग, आँवला चूर्ण २ भाग, हल्दी चूर्ण १ भाग मिश्रित कर नित्य ३ माशे चूर्ण जल के साथ खाने से भीतर-बाहर का उपदंश नष्ट होता है ।

(३) त्रिफला के क्वाथ में उपदंश व्रण धोना बहुत हितकर है ।

(४) हर्र, रसौत, सिरस छाल तीनों समान भाग ले चूर्ण कर शहद में मिलाकर लेप करने से, लिंग में जो उपद्रवयुक्त उपदंश के घाव होते हैं, वे शीघ्र ही अच्छे हो जाते हैं ।

(५) त्रिफला को कड़ाही में डालकर भस्म कर लो । इस भस्म में सेंधा नमक और शहद मिलाकर लेप करने से तीन-चार दिन में उपदंश के बड़े से बड़े घाव ठीक हो जाते हैं । उत्तम गुणकारी मलहम है ।

६७. अण्डकोष शोथ

(१) त्रिफला क्वाथ में गोमूत्र मिलाकर पीने से वातकफ जन्य अण्डकोष की सूजन दूर होती है ।

(२) हर्र छाल, चिरायता, धनिया ६-६ माशा, लौंग ९ माशा, स्वर्ण माक्षिक १ तोला—इन सबके समान मिश्री और मिश्री बराबर शहद—इन सबको ५ दिन खरल कर रख लो । इसे नित्य १ तोले की मात्रा में खाने से अण्डवृद्धि अवश्य दूर होती है ।

नारी रोग

६८. रक्त प्रदर

काला सुरमा को त्रिफला के क्वाथ २४ घण्टे तक स्वेदन करने से अंजन शुद्ध हो जाता है । फिर अंजन

को नींबू के स्वरस में खरल कर लें। शुद्ध अंजन चूर्ण के बराबर हर्र तथा आँवले का चूर्ण अलग-अलग लेकर खरल करें। फिर सबको लसोढ़े के पत्तों के रस या काढ़े में १२ घण्टे खरल कर २-२ रत्ती की गोलियाँ बना लें। दिन में तीन बार २-२ गोली चावल के धोवन या ठंडे जल के साथ लेने से रक्त प्रदर के तीव्र रक्त स्राव में भी शीघ्र ही लाभ होता है।

६९. रक्त गुल्म

(१) हर्र और एरंड की जड़ की छाल ६-६ माशे, सेंधा नमक और यवक्षार ३-३ ग्राम—सबका विधिवत् क्वाथ बनाकर नित्य सुबह-शाम पीने से कुछ दिनों में रक्त गुल्म नष्ट हो जाता है।

(२) हर्र, काला नमक, यवक्षार समभाग पीसकर इसमें तीन माशा चूर्ण लेकर १ तोला घी और ६ माशे लहसुन का रस मिलाकर नित्य कुछ दिन सेवन करने से रक्त गुल्म नष्ट हो जाता है।

७०. योनि भ्रंश

अकाल गर्भपात या बेढंगे तौर पर मैथुन करने पर जब योनि बाहर निकल आती है, तो उसे योनि-भ्रंश कहते हैं।

हर्र का बक्कल, जायफल, सफेद कत्था, सुपारी

नीम की सूखी छाल, मूँग का बेसन—सबको कूट-पीस कर चूर्ण बना लें। करीब २ तोला चूर्ण स्वच्छ महीन कपड़े की पोटली बनाकर योनि में धारण करायें। प्रातः की पोटली संध्या और संध्या की प्रातः बदल दें। २१ दिन के निरन्तर प्रयोग से योनि भ्रंश और योनि-स्राव मिट जायगा। यदि केवल जल का स्राव हो तो ५ ही दिन में लाभ हो जाता है।

७१. योनिकंडू

जिन स्त्रियों के पति कभी सुजाक या उपदंश से पीड़ित रहे हों और उसका विष उनके शरीर में शेष है, प्रायः वही स्त्रियाँ योनि की खुजली से पीड़ित होती हैं। वृद्धावस्था और वात-प्रकोप से भी योनि-कंडू उत्पन्न हो जाती है।

(१) त्रिफला और गिलोय के काढ़े से योनि-प्रक्षालन करने से योनि की खुजली मिट जाती है।

(२) हर्र, नीम की निबौलियाँ और हल्दी को कूट-पीसकर नीम की पत्तियों के रस में खरल कर चने बराबर गोलियाँ बनाकर प्रातः, दोपहर और शाम को एक-एक गोली गरम जल के साथ खाने से योनि की खुजली मिट जाती है।

७२. भग-संकोचन

(१) बड़ी हर्र की मींगी और माजूफल समान भाग ले खूब महीन पीसकर शीशी में रख लो। सम्भोग से १५-२० मिनट पूर्व १ माशा पाउडर योनि के भीतर मल देने से स्त्री की योनि कुमारी षोडशी बाला के समान दृढ़ और संकीर्ण हो जाती है।

(२) हर्र, जायफल, कत्था, नीम की पत्तियाँ और सुपारी का महीन चूर्ण मूँग के यूष में पीसकर कपड़े से छानकर सुखाकर रख लो। यह चूर्ण योनि में रखने से योनि संकीर्ण होती और जल स्राव बन्द होता है।

बाल रोग

७३. बालातिसार

(१) काबुली हर्र का छिलका और बेल की गिरी दोनों समान भाग ले कूट-पीस कपड़छन चूर्ण बना लें। आयुर्बलानुसार १ से ३ माशे की मात्रा में माँ के दूध या जल के साथ देने से बालक के हरे पीले पतले दस्त बन्द होते हैं।

(२) पीली हर्र और बड़ी सुपारी समान भाग का महीन चूर्ण २ से ४ रत्ती तक माँ के दूध या थोड़े जल में घोल कर पिलाने से बदहजमी दूर होती, पाचन क्रिया ठीक होती और बिगड़े हुए पतले दस्त होना बन्द हो जाते हैं।

(३) शिशुमातृका वटी—बड़ी हर्र, छोटी हर्र, अजवायन, वायविडंग, भुना सुहागा, काला नमक, भुनी हींग—सब समभाग ले कूट-पीस कपड़छन कर जल के संयोग से २-२ रत्ती की गोलियाँ बना लो। १ से २ गोली माँ के दूध या जल के साथ देने से बच्चे का अतिसार, आमातिसार, विबन्ध, उदर शूल, अफरा आदि उदर विकार दूर होते हैं।

७४. ज्वर

हर्र, नागरमोथा, नीम की छाल, कड़वे परवल के पत्ते, मुलहठी—सबका सम्मिलित जौकुट चूर्ण ६ माशे, १ छटाँक पानी में पकाकर तोला सवा तोला रह जाने पर बच्चे को पिलाने से सब प्रकार के ज्वर दूर हो जाते हैं।

७५. श्वास-कास

हर्र की छाल, दाख, अड़ूसा और पीपल का चूर्ण मधु या मधु और घृत के साथ चटाने से बच्चे की खाँसी और श्वास नष्ट होते हैं।

७६. बाल शोष (सुखंडी या सूखा रोग)

हर्र २ भाग, पीपल की जटा १ भाग—दोनों को

कूट-पीस कपड़छन कर सुरक्षित रख लें। १-२ रत्ती दवा माता के दूध के साथ प्रातः सायं देने से बच्चों का सूखा रोग अच्छा हो जाता है।

७७. विविध बाल रोग

(१) बाल रोग हर क्वाथ—हर्र, अतीस, पीपल, काकड़ासिंगी, नागरमोथा, मुनक्का, गिलोय, अडूसे के पत्ते, कटेरी की जड़—प्रत्येक समभाग का जौकुट चूर्ण ३ माशे क्वाथ बनाकर प्रातः सायं पिलाने से बच्चे की जुकाम, खाँसी, ज्वर, अतिसार, उदर विकार सभी दूर होते हैं।

(२) हर्र ४ भाग, आँवला, बहेड़ा २-२ भाग, अजवायन १६ भाग, सेंधा नमक १ भाग—सबको कूट-पीस जल के साथ १०-१२ घण्टे खरल कर झड़बेरी बराबर गोली बनाकर छाया में सुखा कर रख लो। अनुपान भेद से बच्चों के प्रत्येक रोग में गुणकारी हैं।

(३) छोटी हर्र, सोंठ, सौंफ, पीपल, भुनी हींग—सब समभाग ले कपड़छन चूर्ण कर लें और स्वच्छ शीशी में रख लें। २ रत्ती से ६ रत्ती तक औषधि माँ के दूध या शहद के साथ देने से बालक का ज्वर, जुकाम, खाँसी, बिगड़े दस्त, उदरशूल, उदरकृमि आदि

सभी व्याधियों में उत्तम लाभ होता है। यह बाल-पंचामृत, दीपन, पाचन और पोषक है।

७८. तालुकंटक

हर्र, वच, कूट को जल के साथ सिल पर पीसकर शहद में मिलाकर चावलों के जल के साथ पिलाने से बालक का तालुकंटक रोग नष्ट होता है।

७९. बालक के रुदन पर

यदि बच्चा बहुत रोता हो तो त्रिफला और पीपल का चूर्ण घी तथा शहद मिलाकर चटाना हितकारी है।

८०. स्मरण शक्ति वर्द्धक योग

हर्र, शतावर, सोंठ, शंखपुष्पी, वच, गिलोय, अपामार्ग, वायविडंग—सब समान भाग ले चूर्ण कर १ से ३ माशा चूर्ण घी में मिलाकर प्रातः सायं चटा-कर ऊपर से मिश्री मिला दूध पिलाने से बालक की बुद्धि और स्मरण शक्ति निश्चित रूप से बढ़ जाती है।

८१. बाल सुधा काजल

बड़ी हर्र का कोयला और जली हल्दी १०-१० ग्राम, कपूर ३ ग्राम, तीनों को कूट-पीस कपड़छन कर उसमें ६ ग्राम सफेदा (जिंक आक्साइड) मिलाकर काँसे के पात्र में रखकर इतना तिल तेल डालो कि वह गीला हो जाय। भली भाँति रगड़ कर डिबियों

में भर लो। यह काजल प्रातः सायं लगाने से बच्चे के समस्त नेत्र-रोग दूर होकर आँखें सुन्दर हो जाती हैं।

रक्त-विकार और चर्म रोग

८२. रक्त शोधक वटी

हर्र का छिलका, पित्तपापड़ा, कूट, गिलोय, ब्राह्मी, अनन्तमूल २-२ तोला ले जौकुट कर १ सेर पानी में पकाकर चतुर्थांश क्वाथ बनाकर छान लें। फिर उस क्वाथ में २½ तोला शुद्ध रसौत डाल कर मंदाग्नि पर पकावें। गाढ़ा होने पर उतार कर उसमें शुद्ध आमलासार गंधक १ छटाँक और सत्व गिलोय २ तोला डालकर इतना घोटें कि गोली बनाने योग्य हो जाय। फिर ३-३ रत्ती की वटियाँ बनाकर रख लें। प्रातः सायं १-२ वटी नित्य ताजे पानी के साथ कुछ दिनों तक सेवन करने से दूषित रक्त शुद्ध हो जाता है। औषधि सेवन काल में अचार, खटाई, गुड़, लाल मिर्च, कड़ुवा तेल वर्जित है। घी, दूध, ताजे मौसमी फल और हरी साग-सब्जियाँ हितकर हैं।

८३. सफेद दाग (श्वित्र)

(१) हर्र, बहेड़ा, बावची, कैथ का गूदा—तीनों का क्वाथ बना नित्य सवेरे कुछ दिनों तक पीते रहने से श्वित्र के दाग दूर होते हैं।

(२) हर्र, बहेरा, आँवला, वायविडंग, बावची, पीपल, हर्र, बाराही कंद, कलिहारी की जड़ प्रत्येक समान भाग ले महीन चूर्ण करें। चूर्ण से दुगुना गुड़ लेकर उसकी चाशनी कर चूर्ण को मिलाकर मोदक बना लें। नित्य ६ माशे पाक सेवन करने से कुष्ठ रोग नष्ट होता है।

(३) हर्र, बहेरा, आँवला, काला जीरा और हरताल का समभाग चूर्ण गोमूत्र में पीसकर लगाने से कुष्ठ के दाग दूर होते हैं।

(४) हर्र की छाल, करंज की जड़, सरसों, हल्दी, बावची, सेंधा नमक, नागरमोथा सबको गोमूत्र में पीसकर लगाने से कुष्ठ के दाग नष्ट होते हैं।

८४. विसर्प

(१) त्रिफला, चिरायता, अडूसा, कुटकी, कड़ुवा परवल, लाल चंदन, नीम की अंतर छाल—सबका जौकुट चूर्ण २½-३ तोला, आध सेर पानी में पकाकर चतुर्थांश क्वाथ बनाकर पीने से विसर्प की दाह, ज्वर, सूजन, खुजली, विस्फोटक, तृषा, वमन आदि व्याधियाँ दूर होती हैं।

(२) त्रिफला, पद्माख, खस, लज्जावंती, कनेर,

जवासा—सबको पानी में पीसकर लेप करने से विसर्प का विकार दूर होता है।

८५. अरुंषिका (बराही)

कफ, पित्त और कृमि-विकार से सिर में अनेक मुख वाली जो क्लेद-युक्त तमाम फुंसियाँ हो जाती हैं, उसे संस्कृत में अरुंषिका और बोल-चाल में बराही या गंज कहते हैं।

अरुंषिका के रोगी को पहले मृदु-विरेचन देकर कोष्ठ साफ करना चाहिए।

मृदु-विरेचनार्थ—छोटी हर्र, सौंफ आधा-आधा तोला, सनाय १ तोला, गुलाब के फूल ४ नग, मुनक्का आधा तोला—सबको मोटा कूटकर २ भाग कर लें। एक भाग सायंकाल एक पाव पानी में औटाकर आधा पाव शेष रहने पर उतार छानकर १ तोला मिश्री मिलाकर रात्रि में भोजन के बाद सोते समय खाने से कोष्ठ शुद्धि होती है।

अरुंषिका रोगी का सिर त्रिफला क्वाथ या त्रिफला क्वाथ में गोमूत्र मिलाकर सींचना और धोना चाहिए।

त्रिफला, लौह चूर्ण, मुलेठी, कमल, सेंधा नमक के कल्क से पकाया हुआ तिल तेल लगाने से अरुंषिका नष्ट हो जाती है।

त्रिफलादि तेल—हर्र, बहेड़ा, आँवला, नीम की छाल, हल्दी, दारुहल्दी, चिरायता और लाल चंदन—समभाग ले कल्क बनाकर, कल्क से चौगुना तिल का तेल तथा पाकार्थ चौगुना जल मिलाकर मंदाग्नि से पकाकर तेल शेष रहने पर छानकर रख लें। इस त्रिफलादि तेल के लगाने से अरुंषिका की फुंसियाँ नष्ट हो जाती हैं। हर प्रकार के फोड़ों-फुंसियों में यह तेल लाभप्रद है।

८६. श्लीपद (फीलपाँव)

(१) रेंड़ी के तेल में भुनी हुई हर्र का चूर्ण गोमूत्र के साथ पीने से एक-दो वर्ष पुराना श्लीपद रोग एक-दो सप्ताह में नष्ट हो जाता है।

(२) हर्र २० तोला, पीपल १ तोला, चित्रक २ तोला, दंतीमूल ४ तोला, गुड़ ८ तोला—सबको कूट-पीसकर शहद में सानकर गोलियाँ बना लो। नित्य सुबह शाम १-१ गोली गोमूत्र या गरम जल के साथ लेने से श्लीपद में बहुत ही लाभ होता है।

८७. बद (फोड़ा)

(१) हर्र की छाल, पीपल, सेंधा नमक—सबको महीन पीसकर अंडी के तेल में पकाकर नित्य ६ माशे खाने से उठता हुआ फोड़ा बैठ जाता है।

(२) हर्र के बक्कल को पानी में औटा कर व्रण

पर सहने योग्य गरम जल धारा छोड़ने से हर प्रकार के व्रण की सूजन और पीड़ा दूर होती है।

(३) हर्र की छाल, पीपल, खली (तिल, सरसों आदि तिलहनों का तेल निकाल लेने के बाद का तेल रहित भाग), सहिजन की छाल, नदी की बालू—सबको गोमूत्र में पीसकर गरम-गरम लेप करने से व्रण की पीड़ा और सूजन मिट जाती है।

(४) काली हर्र और काली जीरी समान भाग जल में महीन पीसकर लगाने से पुराने से पुराना घाव भी शीघ्र ही भर जाता है।

(५) हीलएक या जम्बक मलहम—छोटी हर्र का कपड़छन चूर्ण १० तोला रात के समय ४० तोला पानी में भिगो दें। प्रातः उसे पकाकर चौथाई क्वाथ बनाकर उतार लें। फिर उसमें २० तोला तिल तैल डालकर कलईदार बर्तन में मन्दाग्नि पर पकावें। पानी जल जाने पर छान लें और देशी मोम डालकर गर्म करें। मोम पिघल जाने पर असली चंदन का तेल ५ तोला डालकर उतार लें और बोतल में भर लें। हीलएक या जम्बक जैसे रूप रंग का गुणकारी मलहम होगा। हर प्रकार के फोड़े के घाव पर लगाने से शीघ्र लाभ होता है।

८८. नाड़ी व्रण (नासूर)

(१) श्यामा घृत—त्रिफला, निशोथ, हल्दी, लोध के कल्क से पकाये हुए घी में दूध डालकर उस घी से नाड़ी व्रण को साफ करने से व्रण का स्राव निश्चित रूप से दूर हो जाता है।

(२) सप्तांग गुग्गुल—हर्र, बहेड़ा, आँवला, सोंठ, मिर्च, पीपल, शुद्ध गुग्गुल समभाग ले चूर्ण बनाकर घी में मिलाकर १-१ तोले की गोलियाँ बना लो। पथ्य से रहकर नित्य १-१ गोली खाने से नाड़ी-व्रण, दूषित व्रण, भगन्दर, शूल, गुल्म, उदावर्त और सब प्रकार की बवासीर नष्ट हो जाती है। जिस प्रकार मोर सर्पों का शत्रु है, इसी प्रकार यह सप्तांग गुग्गुल उपरोक्त रोगों का शत्रु है।

(३) त्रिफला के क्वाथ में बिल्ली की हड्डी को पत्थर पर घिसकर उसमें बत्ती भिगोकर भरने से नाड़ी व्रण और भगंदर का व्रण शीघ्र ही अच्छा हो जाता है।

८९. मोच, शोथ आदि

(१) छोटी हर्र १ भाग, आँबा हल्दी, मैदा लकड़ी, रसौत १-१ भाग, फिटकरी, एलुवा आधा-आधा भाग—सबको इमामदस्ते में अलग-अलग कूट कर चूर्ण बना

लें। इन सबके कपड़छन चूर्ण को पानी में मिलाकर सुपारी बराबर गोलियाँ बनाकर सुखाकर रख लो।

चोट, मोच, टूटने की पीड़ा और सूजन हो या व्रण की शोथ, संधिवात, आमवात, कोष्टु शीर्षक आदि की सूजन हो, इन गोलियों को आवश्यकतानुसार जल में घिस कर आग पर थोड़ा गरम कर लेप करो। फिर अंगीठी या खप्पर में अंगारे लेकर आक्रान्त स्थान में सेंक करो। सेंक से लेप सूख जायगा और उक्त स्थानों की सूजन और पीड़ा दूर होगी।

आँख उठने से यदि नेत्रों में लाली, शोथ और वेदना हो तो उसे मिटाने के लिए इस गोली का लेप नेत्र के चारों ओर पलकों को छोड़कर करना चाहिए। केवल दो बार के ही लेप से लालिमा, शोथ और पीड़ा दूर हो जायगी।

भग्नास्थि—त्रिफला, त्रिकटु, बबूल की फली समभाग सबके बराबर शुद्ध गुग्गुल ले एक में मिलाकर ३ से ६ माशे की मात्रा में गर्म दूध के साथ सुबह-शाम सेवन करने से टूटी हुई हड्डी फिर जुड़ जाती है।

९०. खुजली

(१) हर्र की छाल, पवाँर (चकबड़) के बीज, सेंधा नमक, दूब और बन तुलसी (बवई) के बीज

मट्ठे या नींबू के रस में पीसकर लगाने से खुजली और दाद का विनाश होता है।

(२) बड़ी हर्र, आँवला, बहेड़ा, मजीठ, पीपल की लाख, मैनसिल, गंधक समभाग—सबको कूट कपड़-छन कर सरसों के तेल में मिलाकर धूप में रख दें। धूप में बैठ कर इसकी मालिश करने से खुजली तीन दिन में ही चली जाती है।

९१. दाद

(१) बड़ी हर्र को सिरके में घिस कर लगाने से दाद नष्ट हो जाता है।

(२) हर्र, दूब, सेंधा नमक, पवाँर (चकबड़) के बीज और बाकुची को कांजी, मट्ठे या नींबू के रस में पीसकर नित्य ३ बार लेप करने से दृढ़मूल वाले दाद और उकवत नष्ट हो जाते हैं।

९२. चेप्या रोग

वात पित्त के प्रकोप से नख के पास दाह उत्पन्न होकर मांस को पका देते हैं, उसे चिप्प या चेप्या रोग कहते हैं।

हर्र को हल्दी के रस के साथ लोह पात्र में पीस-कर गरम करके लगाने से चेप्या रोग नष्ट हो जाता है।

९३. शरीर दुर्गन्धि

(१) हर्र के चूर्ण को उत्तम-मद्य या शहद के साथ चाटने से पसीना दूर होकर शरीर से अत्यन्त सुगन्ध आने लगती है।

(२) हर्र, कूट, पान तीनों को चूर्ण कर जल में मिलाकर लेप करने से देह की दुर्गन्धि दूर होती है।

(३) हर्र की छाल, खस, नागकेशर, सिरस की छाल, और लोध को पीसकर शरीर पर उबटन लगाने से शरीर की दुर्गन्ध दूर होकर शरीर से सुगन्ध आने लगती है।

९४. स्वेदाधिक्य

(१) हर्र पीसकर शरीर पर मल कर फिर स्नान करने से शरीर का पसीना बन्द होता है।

(२) बड़ी हर्र के चूर्ण को शहद के साथ चाटने से पसीना दूर होकर देह से सुगन्ध आने लगती है।

(३) बबूल की पत्तियाँ भलीभाँति पीसकर शरीर पर मले, फिर हर्र पीसकर शरीर पर मले। दोनों को मलने के बाद स्नान करने से पसीने की अधिकता तत्काल दूर हो जाती है।

(४) हर्र का चूर्ण, चने का सत्तू, कुलथी का सत्तू, कूट, जटामांसी, सफेद चंदन का चूर्ण शरीर पर मलने से अधिक पसीना आना व पसीने की दुर्गन्ध दूर होती है।

९५. कान्तिवर्द्धक उबटन

हर्र की छाल, लोध, नीम पत्र, अनार का बक्कल, आम की छाल—सबको जल के साथ सिल पर पीसकर शरीर और मुख पर उबटन मलने से शरीर का कुवर्ण दूर होकर शरीर की कान्ति और सुन्दरता बढ़ती तथा शरीर सुगन्धित हो जाता है।

विविध रोग नाशक हर्र के कुछ सरल योग

९६. सगुड़ाभया

हर्र के चूर्ण में समान भाग गुड़ मिलाकर तोला तोला भर की गोलियाँ बनावे। इन गोलियों के सेवन से पित्त, कफ, खुजली और कोख का दर्द दूर होता है। बवासीर में भी बहुत गुणकारी है।

हर्र को गुड़ के साथ १ तोला खाने से उदर रोग शोथ, पीनस, खाँसी, अरुचि, जीर्ण ज्वर, अर्श, संग्रहणी, कफ रोग और वात रोग दूर होते हैं।

हर्र की छाल का चूर्ण गुड़ के साथ पीसकर ६ माशे से क्रमशः बढ़ाते-बढ़ाते १-१½ तोला तक बढ़ाकर एक मास तक खाने से शोथ, पीनस, कंठ रोग, श्वास, कास, अरुचि, जीर्ण ज्वर, संग्रहणी और कफवात जन्य सब रोग दूर होते हैं।

९७. कफ, पित्त, मंदाग्नि

हर्र, पीपल, खांड समान भाग ले ३ माशे से ६ माशे तक के मोदक बनाकर खाने से कफ, पित्त विकार और मंदाग्नि दूर होती है।

९८. पित्त ज्वर, खाँसी, रक्तपित्त, विसर्प, श्वास, वमन

हर्र के चूर्ण को तिल के तेल, घी और शहद के साथ अथवा केवल शहद के साथ चाटने से दाहयुक्त पित्त ज्वर, हर प्रकार की खाँसी, ऊर्ध्वग-अधोग रक्त पित्त, विषम विसर्प, श्वास और विकट वमन में शीघ्र उत्तम लाभ होता है।

९९. जायफल-मद

अधिक जायफल के खाने का नशा और गर्मी हर्र का चूर्ण जल के साथ लेने से दूर हो जाती है।

१००. पुराना जुकाम, मूत्रातिसार, रक्त विकार आदि

हर्र का चूर्ण, शुद्ध भिलावा, काले तिल और गुड़ प्रत्येक १-१ छटाँक—सबको भलीभाँति अलग-अलग कूट-पीसकर फिर एकत्र मिलाकर खूब घोटो। जब गोली बनाने योग्य हो जाय तो २५० मि० ग्राम की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रख लो। पहले आधी गोली प्रातः और आधी गोली सायं खाना आरम्भ करें। ज्यों-ज्यों औषधि सात्म होती जाये, आधी-आधी गोली बढ़ाते जाओ। ३-४ गोली से अधिक न लो। इस औषधि के सेवन से पुराना जुकाम, मूत्रातिसार, वायु व कफ के रोग, उपदंश, रक्त विकार और चर्म रोग दूर होते हैं। स्नायुक रोग (नारू) में भी लाभप्रद है। औषधि-सेवनकाल में उचित पथ्य-पालन करें।

—:o:—

तेजकुमार भार्गव द्वारा तेजकुमार-प्रेस (प्रा०) लिमिटेड, लखनऊ में मुद्रित।